ओ३म्

सुधारक

गुरुकुल झज्जर का लोकप्रिय मासिक पत्र

वर्ष 66 | अंक 7 | मार्च 2019 | फाल्गुन 2075 | वार्षिक मूल्य 150 रु०

पं० लेखराम जी
शहीद दिवस - 06-03-1897 ई०

सरदार भगतसिंह
शहीद दिवस - 23-03-1931 ई०

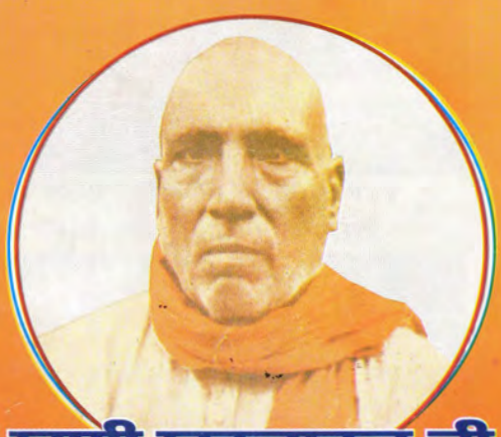

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी
03-04-1955 ई०

स्वामी ओमानन्द जी
22-03-1911 - 23-3-2003 ई०

संस्थापक : स्व० स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती
प्रधान सम्पादक : आचार्य विजयपाल
सम्पादक : विरजानन्द दैवकरणि
व्यवस्थापक : ब्र० अरुण आर्य

सुधारक के नियम व सविनय निवेदन

1. सुधारक का वार्षिक शुल्क 150 रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 1500 रुपये है।
2. यदि सुधारक 20 तारीख तक नहीं पहुंचता है तो आप व्यवस्थापक सुधारक के नाम से पत्र डालें। पत्र मिलते ही सुधारक पुन: भेज दिया जाएगा।
3. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा 'व्यवस्थापक सुधारक' के नाम भेजें। सुधारक वी.पी. रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जाएगा।
4. लेख सम्पादक सुधारक के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित तथा मौलिक होने चाहिएं तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुन्दर लेख में कागज के एक ओर लिखे जाने चाहिएं। अशुद्ध एवं गन्दे लेखवाला लेख नहीं छापा जाएगा। लेखों को प्रकाशित करना न करना तथा उनमें संशोधन सम्पादक के अधीन होगा। अस्वीकृत लेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापिस भेजे जाएंगे।
5. सुधारक में विज्ञापन भी दिए जाते हैं, परन्तु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जाएगा।
6. यह सुधारक मासिक पत्र समाजसुधार की दृष्टि से निकाला जाता है। इसमें आपको धर्म, यज्ञकर्म, समाजसुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, योगासन आदि विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।
7. सुधारक के दस ग्राहक बनानेवाले सज्जन को एक वर्ष तक नि:शुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा पचास ग्राहक बनानेवाले सज्जन को दो वर्ष नि:शुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा उसका फोटो सहित जीवन परिचय सुधारक में निकाला जाएगा।

—व्यवस्थापक

वर्ष :66 अंक : 7
मार्च 2019 विक्रमाब्द 2075
दयानन्दाब्द 195 कलिसंवत् 5118
सृष्टिसंवत्-1,96,08,53,119

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	वैदिक विनय	1
2.	सम्पादकीय	2
3.	लौह पुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द...	5
4.	श्री स्वामी ओमानन्द जी के...	7
5.	अमर शहीद सरदार भगतसिंह	10
6.	आर्य मुसाफिर पं० लेखराम	13
7.	आर्यसमाज स्थापना की शुद्ध तिथि	17
8.	शहीद पं० लेखराम आर्यपथिक...	20
9.	गुरुवर स्वामी ओमानन्द...	21
10.	गुरुकुल झज्जर का 103वां...	27

नोट :- लेखक अपने लेख का स्वयं जिम्मेवार होगा।

सुधारक मासिक पत्र का वार्षिक शुल्क १५० रुपये भेजकर स्वयं ग्राहक बनें और दूसरे साथियों को भी ग्राहक बनाकर सुधार कार्य में सहयोग दीजिये।

-व्यवस्थापक सुधारक

गुरुकुल झज्जर के 103 वें उत्सव की चित्रमय झांकी

ईश्वर प्रार्थनापूर्वक उत्सव का प्रारम्भ करते हुए ब्रह्मचारी

कल्याणी आर्या भजन गाती हुई

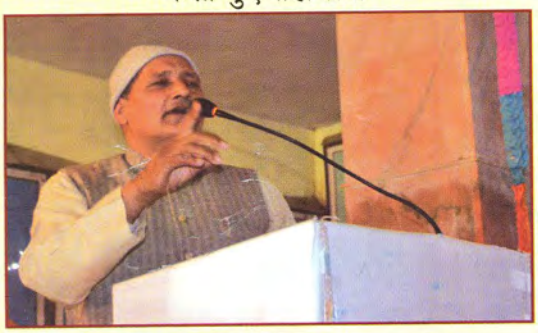

डॉ0 राजपाल आर्य वेदप्रवचन करते हुए

श्री ओम्प्रकाश धनखड़ का स्वागत करते हुए आचार्य विजयपाल

श्री ओम्प्रकाश धनखड़ को मांगपत्र सुनाते हुए आचार्य विजयपाल

स्वामी धर्मेश्वरानन्दजी उपदेश देते हुए

स्वामी विश्वानन्द जी उपदेश देते हुए

श्री मनीष ग्रोवर जी व्याख्यान देते हुए

गुरुकुल झज्जर के 103 वें उत्सव की चित्रमय झांकी

श्री मनीष ग्रोवर को सम्मानित करते हुए
चौ0 पूर्णसिंह, आचार्य विजयपाल

श्री मनीष ग्रोवर जी पुरातत्त्व संग्रहालय देखते हुए

स्वामी धर्मानन्दजी अध्यक्षीय भाषण देते हुए

शीशे की बोतलों पर आसन करता हुआ ब्र0 अभिषेक आर्य

स्तूप का निर्माण करते हुए ब्रह्मचारी

ढाल तलवार से युद्धाभ्यास करते हुए ब्रह्मचारी

मंच पर आसीन संन्यासी, विद्वान्, राजनेता आदि

मंच का संचालन करते हुए श्री राजवीर छिकारा

वैदिक विनय

ई जानश्चितमारुक्षदग्निं,
नाकस्य पृष्ठाद् दिवमुत्पतिष्यन्।
तस्मै प्रभाति नभसो ज्योतिषीमान्,
स्वर्गः पन्थाः सुकृते देवयानः।।

अथर्व० 18.4.14।।

विनय

क्या तुम देवत्व पाना चाहते हो? उस प्रसिद्ध बड़ी महिमा वाले 'देवयान' मार्ग के पथिक बनना चाहते हो? परन्तु शायद तुम उस देवों के चलने के मार्ग को अभी समझ ही न सकोगे। बात यह है कि संसार में दो मार्ग चल रहे हैं। एक मार्ग से संसार के लोग भोग में, प्रकृति में, प्रवृत्त हो रहे हैं–विश्व के एक से एक ऊँचे सुखभोग पाने के लिये दृढ़तापूर्वक अग्रसर हो रहे हैं। दूसरे मार्ग वाले भोगों से निवृत्त होकर अपवर्ग की तरफ, आत्मा की तरफ जारहे हैं। ये क्रमशः पितृयाण और देवयान हैं। इन दोनों मार्गों द्वारा प्रकृति पुरुष के भोग और अपवर्ग नामक दोनों अर्थों को पूरा कर रही है। परन्तु प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनों एक साथ कैसे हो सकती हैं? इसलिये जो लोग भोगों में विश्वास रखते हुवे मुंह उठाये उधर जा रहे हैं, उन्हें लाख समझाने पर भी वे आत्मा की बात नहीं सुनेंगे। देवयान मार्ग तो उन्हें ही भासता है जो भोगों की निस्सारता इतनी अच्छी तरह से समझ गये हैं, परम लुभावने बड़े-बड़े दिव्य भोगों का (जिनका कि हमें अभी कुछ पता भी नहीं है) देखकर जो उनसे भी ऐसे विरक्त हो चुके हैं कि वे अब इस संसार के सर्वश्रेष्ठ सुखभोग के इन्द्रासनों को छोड़ कर ज्ञानरूप तत्त्व की शरण पाने के लिये व्याकुल होगये हैं–भोगों में अन्धकार ही अन्धकार पाकर अब जो ज्ञानमय लोक में चढ़ना चाहते हैं। अतएव ऐसे मनुष्य अपने पुण्यकर्मों द्वारा चिनी हुई, उद्दीप्त और सुरक्षित की हुई अन्दर की चित्ताग्नि का आश्रय लेकर उसमें ही वास्तविक यज्ञ करने लगते हैं। अन्दर की अग्नि को भूल बाह्याग्नि में बड-बड़े यज्ञ तो पितृयाणवाले भी करते हैं परन्तु ऐसे सच्चे यज्ञरूपी शोभनकर्म करनेवाले उन 'सुकृत' लोगों को ही वह देवयान नामक मार्ग इस भोगवाले संसार के अन्धकारमय आकाश में चमकता हुवा दिखाई देने लगता है। यही मार्ग 'स्वः' को, आत्म-सुख को, आत्म-ज्योति को प्राप्त करानेवाला है। यदि तुम में अभी भोगलिप्सा बाकी है तो तुम्हें अभी वह जगमगाता हुवा ज्योतिषीमान् मार्ग भी दिखाई नहीं दे सकता। जबकि संसार के लिये आकर्षक और प्रार्थनीय बड़े-बड़े स्वर्गीय भोगों और दिव्य-विभूतियों के भोग भी आत्महीनता के कारण तुम्हें बिल्कुल बेकार, निःसत्व जचेंगे और यह आत्मप्रकाशशून्य भोगदायक लोक अन्धकारमय दीखने लगेगा तब उसी अंधेरे के बीच में सुवर्ण-रेखा की तरह और फिर विद्युत्-लता की तरह अन्त में चकाचौंध करनेवाली, अनन्तों सूर्यों के प्रकाश को भी मात करनेवाली, ज्योति की तरह वह देवयान का दिव्य-प्रकाश तुम्हारे लिये उत्तरोत्तर बढ़ता जायगा। तब भोगवादियों के लाख समझाने पर भी तुम्हें इन भोगों में राग नहीं पैदा होगा। अतः अभी ठहरो, अभी तो इतना याद रखो कि विषयभोग और ज्ञान बिल्कुल उलटी चीजें हैं। भोग-कामना की रात्रि के बिना हटे ज्ञान-सूर्य का उदय नहीं हो सकता।

शब्दार्थ

जो मनुष्य (**नाकस्य पृष्ठात्**) सुखभोग के लोक से (**दिवं**) प्रकाशमय 'द्यौ' लोक के प्रति (**उत्पतिष्यन्**) ऊपर उठना चाहता हुवा और इस प्रयोजन से (**ईजानः**) वास्तविक यजन करता हुवा। (**चित अग्निं**) पुण्यकर्मों द्वारा चिनी हुई अग्नि का, आन्तर अग्नि का (**आ अरुक्षत्**) आश्रय ग्रहण करता है (**तस्मै**) उसे ही (**सुकृते**) शोभनकर्म करनेवाले मनुष्य के लिये (**ज्योतिषीमान्**) ज्योतिर्मय (**स्वर्गः**) आत्मसुख को प्राप्त करानेवाला (**देवयानः पन्थाः**) 'देवयान' मार्ग (**नभसः**) इस प्रकाशरहित संसार-आकाश के बीच में (**प्र भाति**) प्रकाशित हो जाता है।

सम्पादकीय

गुरु नानकदेव जी की रक्षा हेतु पण्डित लेखराम जी आर्यपथिक का बलिदान

आर्यसमाज के वीर पुरुष जहां भी अत्याचार होता देखते हैं, उसका प्रतिकार करने के लिए सदा उद्यत रहते हैं। अत्याचार के विरोध करने में वे अपना प्राणोत्सर्ग करने में भी पीछे नहीं हटते। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरु के बाग में होने वाले अत्याचार के विरुद्ध अमृतसर और मियांवाली जेल में अंग्रेज सरकार द्वारा दिये गये भयंकर कष्टों को सहन किया। फलस्वरूप सत्याग्रह में विजय पाई और गुरुद्वारा कमेटी की ओर से अकाली भाइयों ने आपका हार्दिक स्वागत किया तथा उसी अकाल तख्त पर ले गये जहां दिये गये भाषण के कारण आप जेल गये थे।

सिख भाइयों का आर्यसमाज सदा सहयोग करता रहा है। उदाहरणार्थ देखिये– पं० लेखराम जी के पास एक क्रूर स्वभाव वाला मुसलमान कई दिन तक आता रहा। पहले तो वह धोती पहनकर मनुष्याकृति में आया करता था, परन्तु 6 मार्च 1897 को कौपीन बांध कर तथा कम्बल ओढकर आया। उस दिन पं० लेखराम जी लाहौर में लाला जीवनदास के घर में ठहरे हुए थे। उस मुसलमान युवक ने आते ही पं० लेखराम जी से वादानुवाद करते हुए कहा गुरुनानक साहेब जाति से यवन (मुसलमान) थे। यह सुनकर पं० लेखराम जी ने कहा– जो लोग गुरु नानक साहेब को यवन मानते हैं, वे मूर्ख हैं। देखो हमारे ग्रन्थों में यह लिखा है। यह कह कर पंडित जी ने ज्योंही पीछे की ओर से अलमारी में से पुस्तक निकालने के लिए पीछे मुड़कर हाथ फैलाया तत्क्षण ही घातक ने छुरी निकाल कर उनकी कुक्षी पर कठोर घाव किया। पं० जी के ऊंचा चिल्लाने से उनकी माता नीचे आ गई, उनको भी बेलना मार कर वह घातक भाग गया। यद्यपि लाला जीवनदास का अनुचर भी इस कोलाहल को सुनकर नीचे आ गया था परन्तु सच्चे अनुचर के अतिरिक्त परार्थ कौन अपना जीवन दे सकता है। इसलिये उसने भी कुछ नहीं किया।

इससे आगे की घटनाएं तो पं० लेखराम जी के जीवन में लिखी हुई हैं। 1897 ई० के मार्च से अप्रैल तक के साप्ताहिक आर्यावर्त के अंकों में पं० लेखराम जी के विषय में अनेक शोकसन्देश छपे हैं तथा एक कविता में कहा गया है कि सिखो! तुम्हारे लिए पं० लेखराम जी शहीद हो गये।

पं० लेखरामजी हेतु कुछ शोक सन्देशों का विवरण इस प्रकार है–

1. 10 मार्च 1897 बुधवार को आर्यसमाज अजमेर में शोकसभा हुई।

2. शाहाबाद हरदोई में 12 मार्च 1897 को पं० रामविलास शर्मा ने लखनऊ के एडवोकेट पत्र से पंडित जी की मृत्यु का समाचार सुनाते हुए शोकसभा की।

3. आर्यसमाज बरेली में कामताप्रसाद त्रिवेदी मन्त्री आर्यसमाज ने शोकसभा का आयोजन किया।

4. देहरादून आर्यसमाज के उपसभापति कृपाराम शर्मा ने 10 मार्च को शोकसभा करवाई।

5. कानपुर में 14 मार्च 1897 को मंगलदेव

संन्यासी और बाबू आनन्दस्वरूप वकील ने शोकसंवेदना प्रकट की ।

6. हिसार आर्यसमाज में 9 मार्च 1897 को आर्यसमाज के मन्त्री धनीराम ने शोकप्रस्ताव किया।

7. मथुरा में श्री मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या ने श्रीमती परोपकारिणी सभा की ओर से शोकप्रस्ताव पारित किया।

8. आर्यसमाज कलकत्ता के बाबू महावीर प्रसाद मन्त्री ने लिखा कि स्थानिक समाज के मन्त्री के स्थान नं० 33 मुसलमान पाड़ा में पं० लेखराम के लिए हार्दिक शोक प्रकट किया।

9. आर्यसमाज रांची (बलूचिस्तान) दयानन्द स्कूल कमेटी आगरा, मिंटगुमरी, बांदीकुई, पिंडी, गुजरखां, हाफिजाबाद, नाहन, इसमाईलखां आदि में भी शोकसभायें हुई।

10. रांची आर्यसमाज में 14 मार्च 1897 को बाबू व्रजमोहन सहाय तथा आर्यसमाज के प्रधान और मन्त्री ने पं० लेखराम जी के गुणगानपूर्वक शोकप्रस्ताव पारित किया।

11. हिसार के हिन्दुओं ने भी पं० लेखराम जी के लिए शोक सन्देश भेजा।

12. हांसी आर्यसमाज की ओर से 15 मार्च 1897 को परमेश्वरीदास मन्त्री आर्यसमाज नगर ने शोक प्रस्ताव पारित करके पं० लेखराम की माता था अनाथ पत्नी के दु:ख में शान्ति हेतु प्रार्थना की।

13. आर्यसमाज बिहार की ओर से 21 मार्च 1897 को पं० मेवा तिवारी, पं० धनुषधारी तिवारी, बाबू केश्वराम भट्ट, पं० गिरिजानन्दन, बाबू मुन्नालाल ने पं० लेखराम के गुणगाकर उनके फण्ड हेतु चन्दा दिया।

14. झांसी आर्यसमाज मन्दिर में मन्त्री नानकचन्द खन्ना ने 14 मार्च 1897 को शोकसभा कराई।

15. आर्यसमाज रावलपिण्डी ने शोकसभा में सरकार से निवदेन किया कि पं० लेखराम के घातक तथा उस से सम्बद्ध जो भी हैं, उन्हें ढूंढकर दण्डित किया जाये। लेखराम फण्ड हेतु वहां चन्दा भी हुआ।

16. आर्यसमाज गुजरखां में महाशोक प्रस्ताव पारित किया। इस समाज के मन्त्री लाला वजीरचन्द रावलपिंडी बदल गये अत: नये मन्त्री बख्शी चुनीलाल से सम्पर्क किया जाये वे फंड हेतु चंदा करायेंगे।

17. 15 मार्च 1897 को आगरा के दयानन्द स्कूल में पं० दौलतराम शर्मा तथा कन्हैयालाल शर्मा ने पं० लेखराम का गुणकीर्तन किया और उनकी आत्मा की शान्ति हेतु प्रार्थना की।

18. सक्खर आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव हो रहा था, उसमें पं० पूर्णानन्द भी उपदेश दे रहे थे, तभी 7 मार्च को तार द्वारा पं० लेखराम की मृत्यु का समाचार मिला। उसी समय मन्त्री बीरबल ने शोक प्रस्ताव पारित कराया।

19. बड़ौत आर्यसमाज में मंगतराम स्वर्णकार मन्त्री ने शोक प्रस्ताव रखवाया।

20. आर्यसमाज मौर्वी ने शोकप्रस्तवा के साथ यह भी निवेदन किया कि आर्यसमाज के दोनों दल मिलकर एक हो जायें तो आर्यसमाज का भला होवे। पहले ही बहुत हानि हो चुकी है।

21. आर्यसमाज देवास ने पं० लेखराम जी के विषय में भाषण के पश्चात् प्रस्ताव पारित किया कि पं० लेखराम जी की पुस्तकों का कई भाषाओं में अनुवाद करा कर थोड़े दामों पर छपाकर बेचना

चाहिये।

22. आर्यसमाज मकोट में पं० छेदालाल ने कवितामय शोकसन्देश सुनाया।

23. पुत्री पाठशाला मकोट (एटा) के पं० केवल कृष्ण शर्मा अध्यापक ने लिखित रूप से शोकसन्देश पढ़ा।

24. आर्यसमाज हसनपुर (मथुरा) में ऋतुपर्ण और भोजप्रसाद मन्त्री ने शोकसन्देश पढा।

25. आर्यसमाज मुरार और गवालियर में भी पं० लेखराम के लिए शोकसंवेदना प्रकट की गई।

26. आर्यसमाज रोहली में 27-3-1897 को शोक सभा की गई।

27. काजिमाबाद (अलीगढ) आर्यसमाज में मुकन्दीलाल मन्त्री ने 16 मार्च 1897 को शोकसभा का आयोजन किया।

28. रुड़की आर्यसमाज में 14 मार्च 1897 को मन्त्री नथीराम ने शोकप्रस्ताव पारित कराया।

29. कौड़ियागंज आर्यसमाज के प्रधान लाला बाबू बुद्धसेन ने पं० लेखराम के जीवन पर प्रकाश डालकर शोक प्रस्ताव किया।

30. आर्यसमाज मुरसान (अलीगढ) में पं० बाबूराम शर्मा ने शोक प्रस्ताव पारित करके पण्डित जी के हत्यारे को शीघ्र पकड़वाकर दण्डित करने का भी प्रस्ताव किया।

31. धरपा आर्यसमाज में श्री शेरसिंह तथा पं० रामदयालसिंह, महाशय किट्टासिंह आर्यसमाज बरतोली, लाला गणेशीलाल आदि ने पं० लेखराम के गुणगान सहित फंड हेतु दान भी दिया।

32. दार्जिलिंग में चैत्रसुदी 9 रामनवमी को बाबू सूदीलाल साह और रामदत्त शुक्ल ने शोकसभा की।

इस प्रकार अनेक स्थानों से शोकसन्देश दिये गये और सभी में पं० लेखराम की माताजी तथा उनकी पत्नी के प्रति सहानुभूति प्रकट की गई। साथ ही अनेक आर्यसमाजों ने सरकार से निवदेन किया कि पं० लेखराम के हत्यारे को पकड़कर दण्डित किया जाये। उस हत्यारे का हुलिया इस प्रकार था।

छोटा व मध्य कद 5 फीट, पांच वा चार इंच, काला रंग, मुख पर झांई का दाग, गाल की उपरी हड्डी पर विशेष, नाक थोड़ी-सी बैठी हुई, बोलने के समय दो दांत जरा बाहर निकले हुए मालूम होते हैं, आंख छोटी परन्तु ढेढर उभरे हुए गाल दबा हुआ, बदन सुबुक सिर के बाल छोटे-छोटे, बीच में से मुंड़े हुए जैसे मुसलमान रखते हैं, दाढी मूंछ छोटी-छोटी, दाढ़ी पूरे तौर पर नहीं आई है, उमर अनुमान 25 साल, जिस बख्त भागा तो गले, सर और पांव से नंगा था और कमर में एक कपड़ा घुटनों तक बांधे हुए था, उर्दू बोलता है और शक्ल में पश्चिमोत्तर देशीय मालूम होता है। मन्त्री आर्यसमाज लाहौर (आर्यावर्त्त शनिवार 20 मार्च सन् 1897 दानापुर, बिहार)

आर्यावर्त के मार्च-अप्रैल 1897 के अंकों में पं० लेखराम जी के बारे में अनेक प्रकार की जानकारियां श्लोक, कविताएं आदि लिखी हुई हैं, यदि इस पत्र के अंक कहीं अच्छी स्थिति में हों तो उनसे लाभ उठाया जा सकता है। प्रस्तुत सामग्री 'कुरुक्षेत्र में स्थित हरियाणा इतिहास एवं संस्कृति अकादमी, (पं० गुलजारी नन्दा भवन) से प्राप्त की है। एतदर्थ उनका आभार।

-विरजानन्द दैवकरणि
मो० - 9416055702

लौह पुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज

जन्म एवं जन्म स्थान– लुधियाना जिला ने राष्ट्र को अनेक विभूतियां दी हैं। स्वाधीनता संग्राम के यशस्वी सेनापति लाला लाजपतराय, शास्त्रार्थसमर के विजयी योद्धा, आर्य गौरव स्वामी दर्शनानन्द जी, स्वाधीनता सेनानी साहित्यकार स्वामी सत्यदेव जी परिव्राजक इसी जिले की देन हैं। पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी भी इसी जिले की ही देन हैं। महर्षि दयानन्द 1876 ई० में पंजाब आए। उनके आगमन से वीर-भूमि के निवासियों में चेतना का संचार हुआ। इस नवजागरण की वेला में लुधियाना जिले के मोही ग्राम के सरदार भगवान्सिंह के घर में पौष मास विक्रम संवत् 1934 की पूर्णिमा को एक बालक का जन्म हुआ। माता-पिता ने इसका नाम केहरसिंह रखा। केहर का अर्थ है:- सिंह, तो केहरसिंह का अर्थ है–सिहों का सिंह। केहरसिंह ने अपने नाम को सार्थक करके दिखाया। यथा नाम तथा गुण की उक्ति आप पर पूर्ण रूपेण चरितार्थ होती है।

पूर्वज– स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के पूर्वज हल्दी घाटी (राजस्थान) से आकर यहां मोही ग्राम में बसे थे। स्वामी जी की रगों में राजस्थान के शूरवीरों व बलिदानियों का उष्ण रक्त बह रहा था। सरदार भगवान् सिंह जी की पत्नी की मृत्यु के बाद केहरसिंह जी का लालन-पालन उनके ननिहाल कस्बा लताला में हुआ।

आर्यसमाज की छाप– केहरसिंह जी लताला के उदासी साधुओं के डेरे में पं० बिशनदास जी से वैद्यक पढ़ते थे। पं० बिशनदास जी संस्कृतज्ञ एवं सुयोग्य चिकित्सक थे। पं० जी वैदिक धर्मी विचारों के थे। उनके प्रभाव में आकर केहरसिंह पर भी आर्यसमाज की छाप पड़ी।

गृहत्याग और ब्रह्मचर्य व्रत– स० भगवान्सिंह की इच्छा थी कि केहरसिंह सेना में जनरल कर्नल बने, परन्तु उन्होंने वैभवशाली परिवार को त्यागकर संन्यासी बनना उचित समझा। ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हुए वे धर्मशास्त्रों का अध्ययन, अध्यापन संस्कृत का अभ्यास व उपदेश देते हुए कई वर्षों तक कौपीनधारी रहे।

संन्यास और विदेश यात्राएं– आर्यसमाज के नेताओं और विद्वानों में स्वामी जी ने सर्वप्रथम संन्यास दीक्षा ली। इनको संन्यास की दीक्षा फिरोजपुर जिले के परवरनड़ नामक ग्राम में श्री स्वामी पूर्णानन्द जी ने विक्रम संवत् 1957 में दी। स्वामी पूर्णानन्द जी ने आपको प्राणपुरी नाम दिया। संन्यास लेकर आप 3-4 वर्ष के लिए दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों में बिना किसी सभा-संस्था की आर्थिक सहायता के धर्म-प्रचार करते रहे। स्वदेशागमन पर पं० बिशनदास जी की आज्ञा से आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में जुट गए। योगाभ्यास, स्वाध्याय, राष्ट्रभाषा प्रचार, ग्राम सुधार, ब्रह्मचर्य, व्यायाम आदि के लिए पहले रामा मण्डी फिर लुधियाना को केन्द्र बनाया। 1914 ई० में मॉरीशस में वेद प्रचार के लिए गए। वहां धर्मोपदेश करते हुए वहां के लोगों को संगठन सूत्र में बांधा।

भारत के राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए राष्ट्र भाषा का प्रचार किया। मॉरीशस के लोगों का नैतिक उत्थान और चरित्र निर्माण किया।

स्वतन्त्रता संग्राम– 1916 ई० में स्वदेश वापसी पर आर्यसमाज के कार्य के साथ राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम में कूद पड़े। मार्शल ला (1919 ई०) के दिनों में मदनमोहन मालवीय जी की प्रेरणा से कांग्रेस को सहयोग दिया। 1920 ई० में बर्मा गए। माण्डले की ईदगाह से 25000 के जनसमूह में स्वामी श्रदानन्द जी के साथ स्वराज्य का प्रचार किया। अग्रेंज सरकार को आप कांटे की तरह चुभने लगे। 1930 ई० में लाहौर में कांग्रेस की सभा से भाषण देने के कारण आपको काल कोठरी में बन्द कर दिया।

दयानन्द मठ दीनानगर की स्थापना– 1938 ई० में इनके द्वारा दीनानगर में दयानन्द मठ की स्थापना की गई। इसे पहले मानव केन्द्र बनाया गया। धर्म प्रचार संस्कृत प्रसार का यह केन्द्र बन गया। सहस्त्रों रोगी हर मास यहां औषधालय से चिकित्सा करवाते हैं। कई क्रान्तिकारी देशभक्त भूमिगत होने पर इसी आश्रम में शरण लेते रहे। महात्मा गांधी जी ने स्वामी स्वतन्त्रानन्द के सुशिष्य यति को विशेष रूप से दयानन्द मठ से ही सत्याग्रह करने की आज्ञा दी। उस समय स्वामी जी के उत्तराधिकारी स्वामी सर्वानन्द जी महाराज मठ के अध्यक्ष थे।

स्वराज्य आन्दोलन– आपने मालेरकोटला, लोहारु व निजाम हैदराबाद के विरुद्ध सफल मोर्चे लगाकर लोगों के अधिकारों की रक्षा की। महात्मा गांधी जी भी आपकी कार्यक्षमता से प्रभावित हुए। आपके सफल व कुशल नेतृत्व से आर्यसमाज की विजय हुई। स्वराज्य आन्दोलनों की गति तीव्र हुई।

आर्यसमाज के प्रचार के लिए आप पूर्वी अफ्रीका और मॉरीशस गए। आप ने वहां पर रह रहे भारतीयों की सांस्कृतिक, सामाजिक तथा राजनैतिक अवस्था का अध्ययन करके भारतीय हितों की रक्षा के लिए बड़ा काम किया। अस्पृश्यता निवारण और दलितोद्धार के लिए अनेक कार्य किए। आप कई भाषाओं के विद्वान्, लेखक, सुवक्ता व इतिहास के मर्मज्ञ विद्वान् थे। आप आर्यसमाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के कार्यकर्त्ता प्रधान रहे।

8 मार्च 1948 को आप परोपकारिणी सभा अजमेर के सदस्य निर्वाचित हुए। लुहारु के नवाब ने जब आर्यसमाज का प्रचार नहीं करने दिया तो आप उससे लोहा लेने के लिए लुहारु गये। इसी समय नवाब के लोगों ने इन पर कुल्हाड़े से वार करके घायल कर दिया। परन्तु यह वीर अपने प्रचार कार्य में सफल हुआ। नवाब ही हार हुई। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के उस समय के खून से सने कपड़े आज भी गुरुकुल झज्जर के संग्रहालय में हैं।

निर्वाण– भीमकाय स्वामी स्वतन्त्रानन्द इतिहास में वर्णित हनुमान्, भीष्म, दयानन्द सरीखे ब्रह्मचारियों की कड़ी में से एक थे। 3 अप्रैल 1955 ई० को बम्बई में आपको निर्वाण की प्राप्ति हुई।

स्वामी ओमानन्दजी के 108 वें जन्मदिवस और 16 वें निधन दिवस पर विशेष स्मरण–

श्री स्वामी ओमानन्द जी के नाम एक ऐतिहासिक पत्र

श्रीनगर
16.5.1974

श्रद्धेय स्वामी जी महाराज!

सादर नमस्ते।

आपका दिनांक 7-5-1964 का प्रेषित शुभकामनाओं से भरपूर कृपा पात्र प्राप्त, तदर्थ धन्यवाद, निस्सन्देह आपका प्रकाशन संग्राह्य है। ऐतिहासिक दृष्टि से यौधेयों की जीवनगाथा यथार्थ रूप में सप्रमाण जनता के समक्ष आने पर प्रेरणादायिक सिद्ध होगी। वैसे भारत का इतिहास नये सिरे से लिखा जाये, इसकी नितान्त आवश्यकता है।

राजनैतिक ऐनक द्वारा जो कुछ मुझे दृष्टिगोचर हो रहा है, उसका संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है।

जम्मू-कश्मीर– एक दृष्टि

जम्मू कश्मीर की राजनैतिक स्थिति अत्यधिक गम्भीर और चिन्ताजनक होती जा रही है।

1. शेख के जीवन का उद्देश्य बन चुका है "कश्मीर को स्वतन्त्र राज्य" के में रूप में देखना। समग्र दिशाओं से निराश होकर विवश शेख ने साधनों में परिवर्तन किया है, साध्य में नहीं। प्रत्यक्ष में शेख जो कुछ भी कहते सुनते हैं वह केवल वंचनामात्र है। पाक के अंगभंग के कारण, अशक्त हो जाने पर शेख का भरोसा उससे उठ चुका है। तदपि सम्पर्क बनाये हुए है, ताकि समय पड़ने पर सहयोग लिया जा सके। एक वर्ग अभी यहां ऐसा है जो पाकिस्तान ही चाहता है।

शेख स्वसाध्यपूर्ति में द्विविध उपसर्ग में तल्लीन है। प्रथम– सौदेबाजी के द्वारा केन्द्र से जो भी उपलब्ध होता है, उसे हथियाना। द्वितीय– निर्वाचनों के द्वारा अथवा अन्य किसी विधि से सत्ता अपने अधिकार में करना, वैसे राज्य प्रशासन शेखबेटा के द्वारा ही संचालित है।

शेख की कल्पना के स्वतन्त्र कश्मीर का मानचित्र इस प्रकार है, अनुकूल वातावरण उत्पन्न करके जम्मू को कश्मीर से पृथक् कर देगा। जम्मू प्रान्त के तीन मण्डल डोडा, पुंछ और राजौरी, जिनमें मुसलमान अधिक हैं; कश्मीर के साथ मिलाने की योजना है।

दिवास्वप्न देखने वाले डॉ० कर्णसिंह (केन्द्रीयमन्त्री) जम्मू को अलग करने के पक्षपाती हैं। एतदर्थ वे प्रयत्नशील भी हैं। क्योंकि वह जम्मू के चबूतरे पर बैठकर राजा (मुख्यमन्त्री) बनने की इच्छा रखते हैं, वह भी हिमाचल प्रदेश को मिलाकर। शायद उनको पर-मार परमार का पता नहीं है। खैर, ऐसे व्यक्तियों के द्वारा शेख की मनचाही तो हो ही जायेगी।

उक्त सन्दर्भ में विश्लेषण करने से यह बात तो स्पष्ट हो ही जाती है कि ऐसी अवस्था में हिन्दुओं का घाटी में रहना असम्भव सा हो जायेगा, वह इसलिये कि कश्मीर में भारत तब तक ही है जब तक यहां एक भी हिन्दू रहता है। हिन्दुओं के निष्कासित हो जाने पर पाकिस्तान के सदृश पक्का भारतविरोधी देश बन सकता है। शेख के अपने प्रयत्नों में निष्फल होने पर भी इनका, यहां के हिन्दुओं पर नज़ला अवश्य ही गिरेगा।

कहना न होगा, जम्मू के बलबूते पर ही कश्मीर भारत का अंग बना हुआ है। पृथक् हो जाने पर कश्मीर निश्चित रूप से भारत के हाथ से

निकल जायेगा। भारत के प्राण कश्मीर में समाविष्ट हैं।

2. वह सन्तरी हमारा, वह पाशंवां हमारा, यह बात स्वतन्त्रता से पूर्व यथार्थ थी, अब नहीं।

यह कौन नहीं जानता कि भारत का उत्तर-पूर्वीय सीमाक्षेत्र चीन से प्रभावित है और उसकी पहुंच के भीतर है। नागालैण्ड (लैण्ड शब्द सन्देहजनक है) विदेशी ईसाइयों का उपनिवेश है। एक आसाम में से दो और प्रान्त, मेघालय तथा अरुणाचल बना दिये हैं, जिनमें ईसाइयों का ही प्राधान्य है। बचे-खुचे आसाम में उन मुसलमानों का बाहुल्य है जो पन्द्रह वर्ष पूर्व पूर्वी पाकिस्तान से घुसपैठ करके आ बसे थे, जिनकी संख्या तीस-चालीस लाख है। वहां से छड़े-छांटे आये थे, यहां आकर पक्के गृहस्थी हो गये। उनको प्रथम श्रेणी का नागरिक भी बना दिया है। जिनके बलबूते पर (विभाजन के उपरान्त ढले कांग्रेसी) फखर उद्दीन अली अहमद साहब सीना तानकर केन्द्र में विराजमान हैं। आजीवन रहेंगे भी। उपरोल्लिखित बातें देश के लिए कम विघातक नहीं हैं।

हिमालय के आंचल में बसे भूटान-सिक्कम, नेपाल, तिब्बत और गिलगित, जहां पर भारत के स्थायी शत्रुओं की गतिविधियां अबाधगति से चल रही हैं। ये कच्चे धागे में बंधी तलवार है भारत के लिए- कहने का तात्पर्य यही है कि अब हिमालय भारत के लिए रक्षक नहीं रहा। उधर से कभी भी संकट उत्पन्न हो सकता है।

3. नेहरु काल में कम्युनिष्टों ने सुनियोजित रूप से कांग्रेस में घुसपैठ की और इन्दिराकाल में केन्द्रीय प्रशासन पर पूर्णरूपेण प्रभुत्व जमाने में सफल हो गये हैं। इनका विश्वास लोकतन्त्र में लेशमात्र भी नहीं है। भारतभूमि कम्यूनिज्म के अनुकूल है नहीं, इसलिये ऊपर से क्रान्ति न करके जनता के द्वारा ही कराने के प्रयत्न में है। भ्रष्टाचार, अनाचार, दुराचार, अनैतिकता, कमरतोड़ मंहगाई, कृत्रिम वस्तुओं का अभाव उत्पन्न करके जनता के आक्रोश को रक्त क्रान्ति के दाहने पर लाकर खड़ा कर दिया है। हो सकता है रेलवे हड़ताल ही पलीता का काम करे। वैसे रेलवे हड़ताल को करने वाले भी यही और कराने वाले भी यही। जिसका उद्देश्य देश की अर्थव्यवस्था को अस्त-व्यस्त करना है, ताकि देश में अराजकता फैल जाये।

विश्व के प्रत्येक देश को एक ही चिन्ता व्याप्त है और वह है, भारत संसार में शक्तिसम्पन्न देश न बन पाये। इसलिये भारत के बने-बनाये ढांचे को ही बरबाद करने की धुन में लगे हुए हैं।

4. ईसाई, मुसलमान का विश्वास और आस्था भारत के प्रति बिल्कुल नहीं है। पुनः भारत में हमारा राज्य होगा, यह बात दोनों की खोपड़ी में चक्कर काटती रहती है। चक्कर ही नहीं काटती रहती अपितु तदनुसार योजनाबद्ध प्रयास भी चलता रहता है। उनकी योजना भी तभी सफल हो सकती है, जब देश हर प्रकार से कमजोर पड़ जायेगा। इस कार्य के लिए ये कटिबद्ध हैं। कौन नहीं जानता है कि कांग्रेस देश में अस्तित्व विहीन है, फिर भी मुसलमानों के सहारे पर खड़ी है। देश में कम्युनिष्टों का, मुसलमानों और ईसाइयों के साथ गठजोड़ है। ये तीनों मिलकर राष्ट्र को नचा रहे हैं और घुन की तरह लगे हुए हैं।

5. देश में विभिन्न प्रान्त स्वतन्त्र होने की बात सोच रहे हैं, तदनुसार प्रयत्नशील भी हैं, राष्ट्रभाषा हिन्दी का विरोध और उर्दू तथा अंग्रेजी का समर्थन, इसी देश में हो रहा है। देश का प्रशासन भी दो प्रतिशत अंग्रेजी पढ़े लिखे व्यक्ति ही चला रहे हैं। है

न, लोकतन्त्र का उपहास!

6. कितने दु:ख के साथ कहना पड़ता है कि भारत की संसद में आपको चीन, पाकिस्तान, अमेरिका तथा रूस से पक्षपाती तो मिल जायेंगे, किन्तु भारत के पक्षपाती बहुत कम संख्या में मिल सकेंगे। उनका भी स्वार्थ प्रधान है, देश नहीं।

7. भारतमाता के पावन मन्दिर की दीवारों को गिराने में तीन चूहे बुरी तरह से लगे हुए हैं। पहले चूहे का नाम है-व्यापारी। दूसरे चूहे हैं-नेतागण। तीसरे चूहे का नाम है-प्रशासन के कर्मचारी। इन्हीं तीन चूहों से देशभर में प्लेग के कीटाणुओं के फैलने की आशंका हो गई है।

8. कितने खेद की बात है कि हमारे देश की सेना भी भ्रष्टाचार से नहीं बच पाई है। बड़ी मुश्किल से स्वीकृत बजट का आधा धन ही सुरक्षा पर खर्च होता होगा।

क्या यह चिन्ता का विषय नहीं है कि पांच छ: अरब रुपया देश की सुरक्षा में खर्च हो, बाकी रुपया भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाये। जबकि चीन और पाकिस्तान सैनिक दृष्टि से अपनी पूरी तैयारी में जुटे हुए हैं। यह ठीक है-सन् 1965 में (18 दिन) और सन् 1971 में (14 दिन) से युद्ध में हमारे सैनिकों ने अभूतपूर्व विजय प्राप्त की है, परन्तु यह भी ठीक था कि उस समय हमारी सेना के पास निरन्तर दो महीने तक लड़ने के लिए युद्ध-सामग्री नहीं थी। सरकारी प्रवक्ताओं के अनुसार भारत सैनिक दृष्टि से अभी तक आत्मनिर्भर नहीं हो पाया है।

9. हमारी विदेश नीति अपने में स्वतन्त्र नहीं है और न ही इसका आधार देशहित है। इसका एक मात्र आधार है तुष्टीकरण के द्वारा अपना अस्तित्व बनाये रखना। परतन्त्र और तुष्टीकरण की नीति के कारण ही देश को अनेक बार भारी हानि उठानी पड़ी है।

10. हिन्दुओं को केवल भारत के अतिरिक्त और कहीं भी बसने के लिए एक इंच जमीन नहीं है फिर भी हिन्दू को अपने राष्ट्र से प्रेम नहीं हैं। यही दोनों हाथों से देश को लूटने में लगा हुआ है। यदि देश को क्षति पहुंची भी, जैसी कि सम्भावना है तो वह हिन्दुओं द्वारा ही पहुंचेगी।

11. भौतिकवाद से प्रताडित विश्व के विचारों में एक रिक्तता उत्पन्न होती जा रही है। रिक्तस्थान कभी रिक्त नहीं रहता, किसी न किसी वस्तु के द्वारा पूरित हो जाता है। उक्त रिक्तता की पूर्ति नास्तिकता कर रही है। चाहिये तो यह था कि आर्यसमाज विश्व में उत्पन्न रिक्तता को वैदिक विचारधाराओं से पूरित करता, जबकि यह अपने आपको एक मात्र धार्मिक तथा सामाजिक संस्था मानता है। घोषणा भी इसकी विश्व को आर्य बनाने की है। खेद है कि यह अपने आप को ही आर्य नहीं बना सका।

आर्यसमाज को ही मैं देश का सच्चा प्रहरी और रक्षक मानता हूं, किन्तु आज वह अपने घरेलू विवादों में बुरी तरह से फंसा हुआ है। आज का आर्यसमाज अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए सम्मेलनों को ही साधन मानकर चल रहा है।

यही समय है आर्यसमाज को कार्यक्षेत्र में उतरने का। यह भी मेरा विश्वास है कि आर्यसमाज के अतिरिक्त और कोई देश को नवीन दिशा नहीं दे सकता, क्योंकि शान्ति और अशान्ति के कारण विचार ही होते हैं।

मातृभूमि की रक्षा के लिए आर्य तप, त्याग और बलिदान कर सकते हैं, उनको आगे आना चाहिये, जो ऐसा नहीं कर सकते, उनको स्वयं ही पीछे हट जाना चाहिये।

देश आज चिन्ताजनक स्थिति में पहुंच गया है, इसलिए सार्वदेशिक सभा को चाहिये कि वह देश की वर्तमान स्थिति पर विचार करने के लिए विभिन्न विषयों के मर्मज्ञों की एक मीटिंग बुलाये और देश को अपने स्वस्थ विचारों से अवगत कराये।

ऊंट से किसी ने पूछा, तेरी गर्दन में खम क्यों है?
कहा ऊंट ने वह कौन-सा ऐजा है जिसमें खम नहीं।

विनीत सेवक
नेत्रपाल शास्त्री, कश्मीर
[आर्यसमाज हजूरी बाग, श्रीनगर]

पुनश्च–

12. पूर्व हुई किसी सन्धि के अनुसार जम्मू-कश्मीर में लागू धारा 370 की अवधि 14 मई सन् 1974 तक थी, जिसकी अवधि राष्ट्रपति ने मजीद पांच वर्ष की और बढा दी है, जिसको मैं राजनीतिक भूल ही मानूंगा। क्योंकि कश्मीर में शेख द्वारा जो भी खेल खेले जाने वाला है, उसके लिए दो वर्ष की अवधि ही पर्याप्त होगी।

13. मध्यावधि के चुनावों के उपरान्त भारत के राजनैतिक चित्र में दो बातें स्पष्ट रूप में उभर कर सामने आई। पहली– कांग्रेस के दिन लद चुके हैं और वह पतन की ओर अग्रसर है। दूसरी– राष्ट्रीय दल के अभाव में उसका स्थान क्षेत्रीयदल ले रहे हैं, जिसका लाभ दोनों कम्यूनिष्टपार्टियों को मिलेगा। हानि किस को होगी, भारत को अर्थात् आर्यों को। आवश्यकता है आर्य राष्ट्रवादी राजनीतिक दल की। आर्य-आर्यसमाजी नहीं।

[इस लेख के लेखक आर्यसमाज हजूरी बाग श्रीनगर (कश्मीर) में रहते थे। जब आतंकवादियों ने आर्यसमाज को अग्नि की भेंट कर दिया तो शास्त्री जी दिल्ली के आर्यसमाज दीवानहाल में आ गये थे] –सम्पादक

अमर शहीद सरदार भगतसिंह

23 वर्ष का कोई भी युवा आज किसी भी अभिनेता के एक-एक संवाद को सुना सकता है, लेकिन भारतीय सभ्यता-संस्कृति और इतिहास के विषय में प्रश्न पूछ लिए जाएँ तो उत्तर उसके पास नहीं, क्योंकि आज वह आजादी की खुली हवा में साँस ले रहा है। लेकिन इसी छोटी-सी आयु में सरदार भगत सिंह 'हँसते-2' और 'मेरा रंग दे बंसती चोला' गुनगुनाते हुए देश के लिए फांसी के फंदे पर झूल गए थे। कारण राष्ट्रभक्ति के संस्कार उन्हें विरासत में मिले थे, क्योंकि उनके दादा सरदार अर्जुनसिंह महर्षि दयानंद सरस्वती के उपदेशों से प्रभावित होकर आर्यसमाजी बन गए थे। स्वामी दयानंद का अमर ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' इस परिवार का धर्मग्रंथ बन गया था, जिसे पढ़कर सरदार भगतसिंह ने जाना कि कोई कितना ही करे, परन्तु स्वदेशी राज्य ही सर्वोपरि उत्तम होता है।

भगतसिंह के दादाजी स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के उपदेशों के प्रभाव से स्वाधीनता संग्राम और समाज सुधार के अग्रदूत बन गए थे। उन्होंने अपने वंश को देश की आजादी के लिए बलिदान कर दिया। सरदार अर्जुनसिंह जी के तीन पुत्र थे, किशनसिंह, अजीतसिंह व स्वर्णसिंह। तीनों ही आजादी के परवाने थे। इनका जन्म 'खटकड़ कलां' जालंधर में हुआ था। घर का वातावरण आर्यसमाज से प्रभावित था। तीनों भाइयों ने क्रान्तिकारी सूफी अम्बाप्रसाद, लाला हरदयाल, महाशय घसीटाराम आदि के साथ मिलकर 'भारत माता सोसायटी' की स्थापना की। देशभक्ति सम्बन्धी उग्र भाषणों व कार्यों की वजह

से अंग्रेजी सरकार ने तीनों भाइयों को गिरफ्तार करक जेल में डाल दिया। सरदार अजीतसिंह आजादी की लड़ाई को तेज करने के लिए विदेश चले गये। वहां से वे 1947 में लौट सके परन्तु आजादी की पहली ही सुबह ''15 अगस्त 1947'' को चार बजे उन्होंने देश के बँटवारे से दु:खी होकर किसी योगी की तरह स्वेच्छा से शरीर त्याग दिया और भगतसिंह के दूसरे चाचा स्वर्णसिंह भी अंग्रेजी जुल्मों से मात्र 23 वर्ष की आयु में ही चल बसे। इस प्रकार भगतसिंह के दोनों चाचाओं ने देश पर अपने प्राण न्यौछावर कर दिए।

इस क्रान्तिकारी परिवार में पंजाब के गाँव बंगा में 'अब लायलपुर पाकिस्तान' माता विद्यावती और सरदार किशनसिंह के घर 28 सितम्बर 1907 प्रात: 9 बजे भगतसिंह का जन्म हुआ। इन्हीं दिनों इनके पिता और दोनों चाचा जेल से रिहा होन पर उनकी दादी ने खुश होकर उन्हें 'भागों वाला' भगतसिंह नाम दिया। बचपन में उनका पालन पोषण दादा जी की छत्रछाया में हुआ। भगतसिंह के मन पर बचपन से ही क्रांतिकारी विचारों और अंग्रेजी अत्याचारों के चित्र अंकित होने लगे। भगतसिंह व उनके बड़े भाई जगतसिंह का यज्ञोपवीत संस्कार आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् पं० लोकनाथ तर्कवाचस्पति जी ने कराया। भगतसिंह के दादा ने दोनों पोतों को बाहों में उठा कर संकल्प किया– ''मैं अपने दोनों वशंधरों को इस पवित्र यज्ञवेदी पर खड़े होकर देश को समर्पित करता हूँ।'' भगतसिंह को शुरू में गाँव के स्कूल में ही भेजा गया, वहां उसने चौथी कक्षा तक पढ़ाई की। इस दौरान उसने घर में रखी चालीस से ज्यादा पुस्तकें पढ़ ली थी जो उनके चाचा अजीतसिंह व सूफी अम्बाप्रसाद आदि की लिखी हुई थी। गाँव वाले स्कूल के बाद भगतसिंह को 1916–1917 ई० में लाहौर के डी०ए०वी० स्कूल ''दयानन्द ऐंगलो वैदिक स्कूल'' में दाखिल कराया गया। 13 अप्रैल 1919 ई० को अमृतसर के जलियाँवाला बाग में सभा हो रही थी। जनरल डायर ने निहत्थे लोगो पर गोली चलवाई उनमें सैंकड़ों लोग मारे गए, जिनमें औरतें और छोटे-छोटे बच्चे भी थे। यह समाचार पूरे देश में आग की तरह फैल गया–भगतसिंह ने जब यह समाचार सुना तो उनका मन भी रो पड़ा और कहा अब जलियाँवाला बाग मेरे लिए एक धार्मिक स्थल है जहाँ मेरे देश के लोगों का खून बहा है। मैं वहाँ की मिट्टी को अपने माथे पर लगाऊँगा। भगतसिंह ने जलियाँवाला बाग 'अमृतसर' जाकर उस पवित्र स्थल की मिट्टी समेटी जहां पर बेगुनाहों का खून बहा था उस मिट्टी को उठा अपने माथे पर लगा बोले ''जब तक मैं इस गोली काण्ड का बदला नहीं ले लेता चैन से नहीं बैठूगाँ''। सन् 1920 ई० गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन के दौरान अन्य छात्रों की तरह भगतसिंह ने भी स्कूल छोड़ दिया। बाद में भगतसिंह ने लाला लाजपत राय द्वारा स्थापित नेशनल कॉलेज में दाखिला लिया। इस कॉलेज का उद्देश्य ही नौजवानों को आजादी का सिपाही बनाना था। 1 फरवरी 1922 में गाँधी जी ने 'असहयोग आन्दोलन' वापस ले लिया। भगतसिंह का परिचय सुखदेव, यशपाल आदि साथियों से हुआ। परिवार वालों की ओर से भगतसिंह की शादी का प्रयास होने पर एक दिन भगतसिंह ने पिताजी को चिट्ठी लिखकर याद दिलाया कि दादा जी ने मुझे देश की आजादी के लिए दान कर दिया था इसलिए मैं दादाजी के वचन को पूरा करना चाहँता हूँ। लाहौर में भगतसिंह

और उनके क्रान्तिकारी मित्रों ने मिलकर एक एसोसियेशन बनाई, जिसका नाम रखा गया 'नव जवान भारत सभा'। यहीं पर भगतसिंह का परिचय चन्द्रशेखर आजाद और रामप्रसाद बिस्मिल से हुआ। सितम्बर 1928 में क्रान्तिकारियों के दल दिल्ली में भारत के अलग-2 जगहों से आकर इकट्ठे हुए। चन्द्रशेखर आजाद जो 'हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसियेशन' के मुखिया थे, उन्होंने क्रान्तिकारी गतिविधियों को बढाने के लिए सबको आमंत्रित किया था। फिर लाहौर में साइमन कमीशन पहुँचने पर भगतसिंह ने 'नव जवान भारत सभा' की एक बैठक बुलाई भगतसिंह ने ऐलान किया- हमारी सभी पार्टियाँ एकत्र हो कर साइमन कमीशन के विरोध में जुलूस निकालेंगी। 20 अक्टूबर 1928 को लाला लाजपतराय के नेतृत्व में साइमन कमीशन के सदस्यों को काले झण्डे दिखाए तथा अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध जुलूस निकाला। जुलूस के रेलवे स्टेशन के पास पहुँचते ही अंग्रेज अधिकारी भड़क उठे। 'पुलिस सुपरिटेन्डेंट ने निहत्थे लोगों पर लाठी चार्ज करने का आदेश दे दिया। जुलूस के आगे वाले सभी नेताओं को चोट आई। यह देखकर लालाजी से रहा न गया उन्होंने गोरे सारजेन्ट से कहा-''तुम इन निहत्थे लोगों पर लाठीचार्ज करवा रहे हो अगर तुम मर्द हो तो अपना नाम बता दो।'' इतना कहते ही लालाजी की पीठ पर और छाती पर कई लाठियों की चोट लगी। बाद में लालाजी ने उस उद्दण्ड गोरे अफसर से कहा, ''मेरे ऊपर पडी एक-2 लाठी ब्रिटिश सरकार के कफन में कील का काम करेगी''। उसके बाद लाठियों के असह्य प्रहार की चोटों के कारण 17 नवम्बर 1928 को लाला जी शहीद हो गये। चन्द्रशेखर आजाद ने क्रांन्तिकारियों की एक बैठक बुलवाई उसमें लाला जी की मौत का बदला लेने का संकल्प लिया। फिर संकल्प को ध्यान में रखते हुए दिल्ली असेम्बली में बम फेंकने की योजना तैयार की गई। भगतसिंह ने साथियों से कहा- ''हमारा उद्देश्य किसी को भी हानि पहुँचाना नहीं है। केवल हलके-फुलके बम द्वारा बहरी अंग्रेजी सरकार के कानों तक अपनी आवाज पहुँचाना है''। सभी साथियों ने एक मत हो समर्थन किया। फिर बम फेंकने की योजना बनाने लगे। 8 अप्रैल 1928 को भगतसिंह व बटुकेश्वर दत्त ने समिति की योजना के अनुसार दिल्ली असेम्बली की कार्यवाही शुरू होते ही बम फेंक दिया तथा क्रांन्तिकारी पार्टी के उद्देश्यों को स्पष्ट करने हेतु पर्चे फेकें। दोनों ने वहां से भागने की बजाय स्वेच्छा से स्वयं को गिरफ्तार करा दिया। दिल्ली के सेशन कोर्ट ने भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त को आजीवन कारावास की सजा सुनाई। भगतसिंह को छुडाने के लिए उनके पिता किशनसिंह व चन्द्रशेखर आजाद आदि ने प्रयास करना चाहा परन्तु भगतसिंह राजी नहीं हुए। वे तो बचपन से ही देश पर बलिदान होने का सपना देखते रहते थे। भगतसिंह व उनके साथियों ने भूख हड़ताल करके जेलों में अनेक प्रकार के सुधार करवाए। इसी बीच 27 फरवरी 1931 को इलाहाबाद के ''अल्फ्रेड पार्क'' में चन्द्रशेखर आजाद शहीद हो गए। 7 अक्टूबर 1930 को सरकारी वकील ने भगतसिंह को जेल में आकर लालच देना चाहा- ''भगतसिंह मुझे दुःख के साथ कहना पड़ता है कि कोर्ट ने तुम्हें फांसी की सजा सुनाई है। मेरी सलाह मानो तो तुम सरकारी गवाह बन जाओ, सरकार तुम्हें माफ कर देगी।'' भगतसिंह ने कहा- ''मुझे इसकी आवश्यकता नहीं।'' फिर भगतसिंह

की माता विद्यावती जी व छोटा भाई कुलतारसिंह भगतसिंह को मिलने जेल में आए। माता जी ने कहा–''पुत्र! जिसे देश पर कुर्बान होने का अवसर मिलता है, उससे बड़ा भाग्यशाली और कोई नहीं होता, मुझे तुम पर गर्व है।'' परन्तु कुलतार सिंह अपने आंसू नहीं रोक पा रहा था। भगतसिंह ने शहीद होने से पहले अपने छोटे भाई कुलतारसिंह को जेल से एक पत्र लिखा था–''अजीज कुलतार, आज तुम्हारी आँखों में आँसू देखकर बहुत रंज हुआ। आज तुम्हारी बातों में बहुत दर्द था, तुम्हारे आँसू मुझसे बर्दाश्त नहीं होते। बर्खुरदार हिम्मत से शिक्षा प्राप्त करना और सेहत का ख्याल रखना। हौसला रखना और क्या कहूँ.....'खुश रहो अहले वतन हम तो सफर करते है।'' फांसी वाले दिन जब जेलर भगतसिंह को जेल-कोठरी में लेने आए तब भगतसिंह एक पुस्तक पढ़ रहे थे। उन्होंने उसे दो मिनट रुकने के लिए कहा फिर पुस्तक बन्द कर उनके साथ चल दिए। अन्त में 23 मार्च 1931 की शाम 7 बजे अंग्रेजी सरकार ने तमाम नियम कानूनों की धज्जियाँ उड़ाते हुए राजगुरु, सुखदेव व भगतसिंह को फांसी पर लटका दिया। वे हँसते गाते हुए फांसी के तख्ते पर चढ़ गए। मुख्यद्वारा से लाशें न निकाल कर एक स्थान से दीवार तोड़कर स्ट्रेचर द्वारा वहां से लाशें बाहर निकाली गयी और सतलुज के किनारे रात को मिट्टी का तेल डालकर आग लगा दी। यह खबर जनता में आग की तरह फैल गई लाखों की भीड़ वहां पहुंची जहां उन्हें जलाया जा रहा था, लोगों ने इन तीनों शहीदों का अंतिम संस्कार पुनः वैदिक विधि से किया। उनके बलिदान दिवस 23 मार्च को स्मरण करते हुए उन्हें शतशः नमन।।

अरुण आर्य शास्त्री (द्वितीय वर्ष)

आर्य मुसाफिर पं० लेखराम

लेखक– आनन्द देव शास्त्री, पूर्व प्रवक्ता
(संस्कृत दिल्ली सरकार)

पं० लेखराम जी का जन्म चैत्र सम्वत् 1915 विक्रमी शुक्रवार के दिन, सैय्यदपुर गांव, तहसील चकवाल, जिला झेलम में हुआ था।

आपके दादा नारायणसिंह, सैय्यदपुर के हाकिम, सरदार कान्हसिंह गिल मजीठिया के यहां घुड़सवार थे।

नारायण सिंह के दो पुत्र हुए। महता तारासिंह तथा महता गन्डासिंह। महता तारासिंह का विवाह सम्वत् 1912 में हुआ। उनके घर में तीन पुत्र तथा एक पुत्री उत्पन्न हुई। लेखराम बडे पुत्र थे। तोताराम तथा बालकराम छोटे पुत्र थे। लड़की सबसे छोटी थी। जिसका नाम मायावती था।

छः वर्ष की आयु में लेखराम को उर्दू, फारसी पढने के लिये मदरसे में भेजा गया। पं० जी तीव्र बुद्धि तथा अपनी जिद्द के पक्के थे। एक बार मदरसे में पं० जी को प्यास लगी। मदरसे का मटका गन्दा था। अतः पं० जी ने मौलवी से घर से पानी पीकर आने की आज्ञा मांगी। किन्तु मौलवी ने कहा पानी पीना हो तो इसी मटके में से पी घर नहीं जाना है। इस पर पं० जी सारे दिन प्यासे रहे किन्तु उस मटके में से पानी नहीं पिया।

पं० जी का रंग सांवला, माथा चौड़ा, छाती विशाल, शरीर गठाला सिंह जैसा था, स्वभाव से हंसमुख थे। दासत्व भी भावना बिल्कुल नहीं थी।

21-12-1875 ई० को इनके चाचा

गंडाराम ने 17 वर्ष की आयु में उनको पुलिस में उनको भर्ती करा दिया। उन्नति करते हुए आप सार्जेन्ट पद पर पहुंच गये। एक सिक्ख सिपाही की संगत से आपका ईश्वर भक्ति की तरफ झुकाव हुआ तथा आप कृष्ण भक्त होकर वृन्दावन जाने की सोचने लगे। गीता पर किसी का भाष्य पढते हुए आपको मुन्शी कन्हैय्यालाल अलखधारी के ग्रन्थों के विषय में जानकारी मिली। आप उन दिनों अद्वैतवादी थे। उन दिनों अखबारों में स्वामी दयानन्द की धूम मची हुई थी। आपने अद्वैतवाद को तिलाञ्जली दे दी। तथा सम्वत् 1937 के अन्तिम भाग में पेशावर में भाई रंजी की धर्मशाला में आर्यसमाज की स्थापना कर दी। आप उस समय नवीन वेदान्त का खण्डन नहीं कर पाते थे। अत: उस विषय का संशय मिटाने तथा महर्षि दयानन्द का आशीर्वाद लेने 5 मई 1880 ई० को एक महीने की छुट्टी लेकर ऋषि दयानन्द के दर्शनार्थ अजमेर को चल पड़े। 17 मई को सेठ फतहमल की धर्मशाला में पहुंच ऋषि के दर्शन किये। पं० जी ने महर्षि से दस प्रश्न पूछे। महर्षि के अल्पकालिक सत्संग से पं० लेखराम जी के विचार आर्यसमाज के प्रति चट्टान की तरह दृढ हो गये।

अजमेर से आते ही आपने पेशावर में आर्यसमाज के प्रचार की धूम मचादी तथा ''धर्मोपदेश'' नाम की पत्रिका निकाली। तब पं० जी मुहम्मदियों से शास्त्रार्थ करने लगे थे। एक बार एक मुसलमान अधिकारी आपके काम की जांच करने आया। तबं वह पं० जी से वाद विवाद में उलझ गया। तब क्रुद्ध होकर उसने पं० जी की विरोधी रिपोर्ट लिख दी; जिससे पं० जी का सार्जेन्ट का पद तोड़ दिया गया।

सन् 1882 में महर्षि का एक पत्र आपके पास आया। जिसमें पहला कार्य गोरक्षा के लिये सरकार को पत्र लिखना तथा दूसरा काम पंजाब में हिन्दी का प्रचार करना था। आपने दोनों कार्य बडे लगन से किये। उन्हीं दिनों पं० जी को कादियान के मिर्जागुलाम अहमद की लिखी पुस्तक ''बुराहीन अहमदिया'' मिल गई। उस पुस्तक में आर्यसमाज पर आक्षेप थे तब पं० जी ने उस पुस्तक का उत्तर लिखा तथा त्यागपत्र स्वीकृत होने तक ''तकजीव बुराहीन अहमदिया'' का प्रथम भाग लिख दिया।

पं० जी के पेशावर से सुआबी थाने में स्थानान्तरित हो जाने पर ''धर्मोपदेश'' पत्रिका बन्द हो गई। सुआबी से आप थाना कालूखां बदले गये।

आप मद्यमांस से बहुत घृणा करते थे। एक बार आप किसी काम से पेशावर गये तो आर्यसमाज का अधिवेशन किसी मांसाहारी तहसीलदार की धर्मशाला में हो रहा था। अधिवेशन के बाद चुनाव में उसी तहसीलदार को आर्यसमाज का प्रधान बनाया गया। तब पं० जी के विरोध करने पर समासद् उनसे उल्टे बोले, तब पं० जी विरोध स्वरूप वहां से उठकर चले गये।

जून 1884 ई० में लेखराम को सार्जेन्ट से पुलिसमेन बना दिया। फलस्वरूप 24 सितम्बर 1884 को आपने पुलिस सेवा से त्यागपत्र दे दिया। 30 अक्टूबर 1883 ई० में ऋषि का देहावसान हो गया। तब पं० लेखराम जी ने ऋषि का काम अपने कंधों पर ले लिया। यदि कोई हिन्दू ईसाई या मुसलमान बनने लगता तो आप तत्काल उसके पास पहुँच उसे विधर्मी होने से बचा लेते थे।

जम्मू के ठाकुरदास को विधर्मी होने से बचाने के लिये आप तीन बार छुट्टी लेकर जम्मू गये थे।

जब आप लाहौर रहने लगे, उन्हीं दिनों कादियां के मिर्जा का आपने विज्ञापन देखा, उसमें उसने अपने आप को खुदा का पैगम्बर सिद्ध करने का प्रयत्न किया था तथा चमत्कार न दिखाने पर 2400 रुपये इनाम देने की घोषणा भी की थी। पं० जी स्वयं अहमदिया के कोठे पर जा धमके तथा उसे शास्त्रार्थ के लिये ललकारा। तब मिर्जा कोई उत्तर न दे सका। तब पं० जी ने वहां आर्यसमाज की स्थापना कर दी।

1886 ई० के आरम्भ में पं० जी के प्रचार की धूम मच गई थी। उन दिनों आपने ''तकजीव बुराहीन अहमदिया'' पुस्तक लिखी। आपने मिर्जा की पुस्तक ''सुरमा चश्म अरिया'' का उत्तर ''नुस्खा खब्त अहमदिया'' लिखा।

ऋषि की मृत्यु हुए साढे चार वर्ष बीत गये थे। मुल्तान आर्यसमाज के प्रस्ताव पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने पं० जी को 1-7-1888 के अधिवेशन में ऋषि के जीवन को खोज करने के लिये नियुक्त किया। नवम्बर 1888 ई० में आप आर्य मुसाफिर बने। आपने लाहौर से ऋषि जीवन का अन्वेषण प्रारम्भ किया। लाहौर से जालन्धर मथुरा होते हुए आप अजमेर पहुंचे। वहां से वैदिक विजय पथ पत्रिका निकलवाई वहां से नसीराबाद शास्त्रार्थ करके मेरठ आए। मेरठ मे आपने ''निवेद बेगवान'' पुस्तक छपवाई। उसके बाद प्रयाग पहुंचे। इन दिनों यहीं पर वैदिक यन्त्रालय था। वहां पं० भीमसेन द्वारा ऋषि भाष्य में मिलावट होती देखकर उसको धमकाया तथा ठीक करवाया। तब मिर्जापुर काशी होते हुए दानापुर पहुंच गये यहां से कलकत्ता होते हुए, कुम्भ पर हरिद्वार पहुंच गये। हरिद्वार से वैशाख 1948 में सक्सर आर्यसमाज पंजाब के उत्सव पर पहुंच गये। हैदराबाद में एक रईस परिवार को मुसलमान होने से बचाया। 1892 ई० के अक्टूबर नवम्बर के महीने में आपने ऋषि जीवन की खोज में बिताये।

वैशाख सम्वत् 1950 में पं० जी ने 35 वर्ष की आयु में, मरी पर्वत अन्तर्गत, भन्न गांव की कुमारी लक्ष्मी से विवाह किया। विवाह के पश्चात् आपने अपनी पत्नी को पढाना प्रारम्भ किया।

जोधपुर का महाराजा प्रतापसिंह आर्यसमाजी होते हुए भी मांसाहारी था, उसने पं० भीमसेन से मांसाहार के पक्ष में सम्मति लिखवाली, तब पं० लेखराम जी ने पं० भीमसेन को धमकाया तथा मांसाहार के विरुद्ध बयान दिलवाया।

सितम्बर 1893 में आप पत्नी को जालंधर ले आए। 18 मई 1894 ई० के दिन पं० लेखराम जी के घर पुत्र रत्न उत्पन्न हुआ। आपने उसका नामकरण संस्कार वैदिक रीति से करवाया। पं० जी पुत्र को घर छोड प्रचार पर चले गये, पीछे से उनका एकमात्र पुत्र रुग्ण होकर 18 अगस्त को परलोक सिधार गया।

एक बार आप को पता चला कि ग्राम-पायल (पटियाला राज्य) में कोई व्यक्ति मुसलमान बनने जा रहा है। पं० जी रेल में यात्रा पर निकल पड़े। मार्ग में किसी व्यक्ति ने आपको बताया कि ''पायल'' गांव में तो रेल नहीं रुकेगी। गाड़ी जब स्टेशन पर नहीं रुकी तो पं० जी ने पहले तो

बिस्तर गाड़ी से बाहर फेंक दिया तथा साथ ही स्वयं भी चलती गाड़ी से कूद पड़े। तब पं० जी को खरोचें भी आई तथा कपडे भी फट गये। परन्तु पं० जी कपड़े बिना झाडे ही बिस्तर उठा पायल गांव की तरफ चल दिये। गांव में जाकर पं० जी ने उस व्यक्ति को पता पूछा तथा उसके घर गये। उस व्यक्ति ने पं० जी की दशा देखकर उसका कारण पूछा तो पं० जी ने चलती रेल से कूदने की बात उस व्यक्ति को बताई। इस पर उस व्यक्ति ने कहा– जिस धर्म में आप जैसे बलिदानी व्यक्ति हों, मैं उस धर्म को कभी नहीं छोडूंगा।

पं० जी की निर्भयता की एक घटना इस प्रकार है– पं० जी 1896 को मार्च महीने में अजमेर के उत्सव में सम्मिलित हुए। तब नगर कीर्तन में उनके व्याख्यान से कुछ मुसलमान भडक उठे। ख्वाजा चिश्ती की दरगाह पास ही थी। आर्य भाई डर कर भाग गये। पं० जी वहां अकेले ही रह गये। पं० जी ने सुन रक्खा था कि किसी भी धर्म के पूजा स्थल से 30 कदम दूर खड़े होकर कोई भी व्यक्ति धर्म प्रचार कर सकता है। तब आप दरगाह के द्वार पर पहुंचे तथा उच्च स्वर से कदम गिनना शुरू कर दिया। मुसलमान आप की हरकतों को ध्यान से देख रहे थे। तीसवें कदम पर पहुंचकर पं० जी ने धर्म प्रचार करना शुरू कर दिया। कबरपरस्ती का जबरदस्त खण्डन किया। हजारों मुसलमान वहां उनका भाषण सुनते रहे किसी ने भी चूं तक भी नहीं की।

पं० जी को लोभ दूर से भी छू नहीं सकता था, सभा आप को जितना भी खर्चा देती थी, आप उस में से भी कुछ रुपये सभा को वापिस दे देते थे।

उन दिनों पं० जी से चिड कर मुसलमानों ने उन पर मिर्जापुर, अमृतसर, लाहौर, दिल्ली, बम्बई में मुकद्दमे चलाये। जिनमें से अधिक तर उनकी बिना पेशी ही रद्द हो गये। जब मुसलमानों ने देखा कि यह व्यक्ति कानून से काबू नहीं आयेगा। तब उन्होंने पं० जी की हत्या करने की योजना बनाई। तब एक काला नाटा खूंखार सा मुसलमान पं० जी के पास आया तथा पं० जी से हिन्दू बनने की प्रार्थना करने लगा। पं० जी ने उस हत्यारे पर विश्वास कर लिया। जब शाम छः बजे पं० जी महर्षि के जीवन लेखन का कार्य पूरा कर खड़े होकर अंगडाई लेने लगे, उसी समय उस दुष्ट ने पं० जी के पेट में कई चाकूमार के घुमा दिये, जिससे उनकी अंतडियां बाहर निकल आई। पं० जी ने एक हाथ से अंतडियां सम्भाली तथा दूसरे हाथ से उस दुष्ट को पकड़ने लगे। तभी पं० जी की माता जी ने उस दुष्ट को पकड़ लिया; परन्तु उस दुष्ट ने पास रक्खा बेलन उठा माता जी के हाथ पर मारा, जिससे वह छूट कर भाग गया।

तब पं० जी को अस्पताल ले जाया गया, जहां सिविल सर्जन डॉ० पैरी ने कई घंटे तक उनकी आंतों को सीया। किन्तु पंडित जी को नहीं बचाया जा सका। इस प्रकार पं० लेखराम जी का देहावसान 6 मार्च 1897 को हुआ। आपने मरने से पहले आदेश दिया कि आर्यसमाज से लेखन कार्य बन्द नहीं होना चाहिये। ऐसे बलिदानी आर्य मुसाफिर पं० लेखराम जी को शतशः नमन।

सम्पर्क सूत्र
111/19 आर्य नगर, झज्जर
मो० - 9996227377

आर्यसमाज स्थापना की शुद्ध तिथि

संसार में सामान्य और विशेष घटनाएं प्रतिदिन घटती रहती हैं; उन घटनाओं का तिथि-तारीख, सन्, संवत् आदि के साथ गहरा सम्बन्ध होता है। यदि केवल घटना मात्र स्मरण रहे तो आगे चलकर यह सन्देह बना रहता है कि यह घटना कब घटी, सही तिथि के अभाव में कुछ व्यक्ति घटना को ही काल्पनिक मान लेते हैं। इसलिये प्रत्येक घटना के इतिहास के साथ उसके सही समय का निर्धारित होना ही अत्यावश्यक है।

जैसे भारत में ही लें- सृष्टि उत्पत्ति के विषय में भारतीय और पाश्चात्य लेखकों में विभिन्न मत प्रचलित हैं, इसी भांति-वेद आविर्भाव का समय भी अनेक मान्यताओं के बीच लटकता रहता है। महाभारत युद्ध कब हुआ इस विषय में संसार के शोधकर्ताओं की 15 अलग-अलग मान्यतायें हैं। महावीर स्वामी के जन्म विषय में 14 मत हैं, महात्मा बुद्ध के निर्वाण विषय में भारत, लंका, चीन, जापान आदि में 23 मान्यतायें हैं। इसी प्रकार चन्द्रगुप्त मौर्य, चाणक्य, चन्द्रगुप्त द्वितीय, कालिदास, शंकराचार्य, वराहमिहिर, हर्ष शूद्रक आदि भारत की महान् विभूतियों के विषय में एक सही तिथि का निर्धारण आज तक नहीं हो पाया है। इतिहास की सही तिथियों के श्लोक प्रमाण, कलिसंवत्, युधिष्ठिर संवत्, शकसंवत् आदि पुरातात्त्विक प्रमाणों की ग़लत ढंग से व्याख्या करने तथा भारतीय इतिहास को नवीनतम दिखाने के प्रयास भी इसमें मुख्य कारण हैं।

इसी प्रकार का विवादास्पद विषय आर्यसमाज का स्थापना दिवस भी है। यह अवस्था तो तब है, जबकि इसके संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती का स्वयं का लिखा हुआ पत्र तक विद्यमान है। सही तिथि विषयक प्रमाण एकत्र करके पं० युधिष्ठर मीमांसक, पं० सत्यकेतु विद्यालंकार, स्वामी विद्यानन्द सरस्वती, पं० इन्द्रविद्यावाचस्पति आदि शोधकर्ता आर्यविद्वानों ने पर्याप्त खोज और विवेचन करने के उपरान्त यह निष्कर्ष निकाला है कि आर्यसमाज की स्थापना मुम्बई में चैत्र शुक्ला पञ्चमी, संवत् 1932 विक्रमी (गुजराती संवत् 1931) तदनुसार 10 अप्रैल 1875 ई० शनिवार को हुई थी। इतना होने पर भी आजकल प्रत्येक आर्यसमाज चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाता आ रहा है। इस विषय में कुछ प्रमाण द्रष्टव्य हैं-

1. महर्षि दयानन्द सरस्वती ने श्री गोपालराव हरि देशमुख को पत्र लिखा है-

मुम्बई में चैत्र शुद्ध 5 शनिवार के दिन संध्या के साढे पांच बजते आर्यसमाज का आनन्दपूर्वक आरम्भ हुआ। ईश्वरानुग्रह से बहुत अच्छा हुआ। आप लोग भी वहां आरम्भ कर दीजिये। विलम्ब मत कीजिये। नासिक में भी होने वाला है।.....डाक्टर माणिक जी ने आर्यसमाज होने के लिए स्थान दिया है, परन्तु संकुचित है।.....।

-संवत् 1931 मिति चैत्र शुद्ध 6, शनिवार

परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा प्रकाशित महर्षि दयानन्द सरस्वती का पत्रव्यवहार, भाग

1, पृष्ठ 57-58, सम्पादक- डॉ० वेदपाल, सन् 2015 ई०।

इससे पहले यही पत्रव्यहार पं० भगवद्दत्त जी तथा पं० युधिष्ठिर मीमांसक भी लाहौर और बहालगढ- रेवली सोनीपत से भी प्रकाशित कर चुके हैं।

आर्यसमाज की स्थापना वाले दिन 10 अप्रैल 1875 को 'टाइम्स आफ इंडिया' अंग्रेजी समाचार पत्र के प्रभात संस्करण में आर्यसमाज स्थापना की सूचना इस प्रकार प्रकाशित हुई थी-

"A meeting will be held at 5:30 P.M. today in the Girgam Back Road, in the bungalow belonging to Maneek Ji Aderjee when Pt. Dayanand Saraswati will perform the caremonies or formation of Arya Samaj. All well wishes of the causes are invited to attend" (P.3)

अर्थात्- आज सायं 5:30 गिरगांव बैंक रोड पर स्थित डॉ० मानक जी के बंगले में एक मीटिंग में होगी जिसमें पं० दयानन्द सरस्वती आर्यसमाज की स्थापना करेंगे। सभी समान उद्देश्य वाले लोगों को इसमें सम्मिलित होने के लिए बुलाया गया है।

यदि स्थापना चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को हुई होती तो समाचार पत्र यह सूचना क्यों छापता?

इसी विषय में डॉ० सुरेन्द्र कुमार जी पूर्वकुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरद्वार द्वारा प्रस्तुत उद्धरण पाठकों के ज्ञानवर्धन हेतु दिया जा रहा है इसके पश्चात् आर्यसमाज की स्थापना तिथि हेतु कोई विवाद नहीं रहना चाहिए। डॉ० सुरेन्द्र कुमार जी लिखते हैं-

क्या समाचार पत्र भी अपनी ओर से गलत कल्पना करके स्थापना की तिथि गलत बतायेगा? क्या स्वामी दयानन्द अपने पत्र में गलत सूचना देंगे? ऐसा संभव नहीं है। आर्यों ने यहां स्वामी दयानन्द को भी गलत बना दिया है।

आर्यसमाज की स्थापना के 11 मास पश्चात् माघ सं० 1932 को बम्बई आर्यसमाज की ओर से 'श्री आर्यसमाजना नियमो' नामक पुस्तक प्रकाशित हुई, उसके आरम्भ में लिखा है-'श्री आर्यसमाज स्थापना, संवत् 1932 (गुजराती) ना चैत्र शुद्ध 5 ने शनिवार।'

पं० लेखराम महर्षि की जीवन विषयक सामग्री की खोज के लिए बम्बई गये थे। उन्होंने अपनी खोज के आधार पर लिखा है-

''चैत्र सुदी 5, शनिवार सं० 1932, तदनुसार 10 अप्रैल सन 1875.....शाम के समय, मोहल्ला गिरगांव में डॉ० मानक जी के बागीचे में.....उसी दिन में आर्यसमाज की स्थापना हो गई।''

पं० देवेन्द्रनाथ द्वारा रचित महर्षि के जीवन चरित में भी यही 'चैत्र शुक्ला पंचमी' तिथि अंकित है।

पं० सत्यकेतु विद्यालंकर तथा पं० इन्द्रविद्यावचस्पति ने 'आर्यसमाज का इतिहास' में चैत्र शुक्ला पंचमी तिथि ही दी है।

सन् 1940 तक चैत्र शुक्ला पंचमी को ही आर्यसमाज का स्थापना दिवस मनाया जाता था। उसके बाद कुछ भ्रान्तियों और कुछ दुराग्रहों के

कारण 'चैत्र शुक्ला प्रतिपदा' को मनाया जाने लगा। बस, यहीं से भ्रान्ति और विवाद आरम्भ हुआ।

विवाद का आरम्भ– इस विवाद का प्रारम्भ इस प्रकार हुआ। हैदराबाद सत्याग्रह के समय सितम्बर 1931 में स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी बम्बई के आर्यसमाज काकड़वाड़ी (गिरगांव) में गये। वहां भवन पर लगे शिलालेख में उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना तिथि 'चैत्र सुदी 1, सं० 1931 (गुजराती), 7 अप्रैल, बुधवार सन् 1875' अंकित देखी। उसके आधार पर उन्होंने सार्वदेशिक सभा दिल्ली को विचारार्थ लिखा। इस विषय पर सभा की 15-12-1940 की अन्तरंग में निर्णय किया गया कि स्थापना दिवस चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को मनाया जाये।

वस्तुत: यह शिलालेख बहुत बाद का है और किसी भ्रान्ति के आधार पर लिखा गया है। यह भी संदेह होता है कि कहीं इसके मूल में नये आर्यों के मन में दिन को शुभ-अशुभ मानने के पौराणिक संस्कार तो नहीं हैं? जब कि चैत्र शुक्ला प्रतिपदा की तिथि महर्षि द्वारा स्वयं लिखित प्रमाण तथा अन्य प्रमाणों की तुलना में पूर्णत: अप्रामाणिक है। जिस भवन पर वह लगा है वह भवन भी बाद में बना है। कम से कम 1875 तक नहीं बना था। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपनी आत्मकथा 'कल्याण मार्ग का पथिक' में सन् 1887 में की गई बम्बई की पहली यात्रा का विवरण देते हुए आर्यसमाज गिरगांव के विषय में लिखा है– ''आर्यसमाज मन्दिर का उन दिनों केवल चबूतरा ही बना हुआ था जिस पर मैंने व्याख्यान भी दिया।'' (पृष्ठ 143) सन् 1890-93 के मध्य पं० लेखराम जब मुम्बई गये, तब तक भी आर्यसमाज का भवन नहीं बना था।

पं० भगवद्दत्त का विचार है कि महाराष्ट्र में चैत्र प्रतिपदा को अवकाश होता है। जैसा कि आजकल भी कोई दिवस छुट्टी की सुविधा से कुछ दिन आगे-पीछे मना लिया जाता है। ऐसे ही अवकाश के कारण आर्यसमाज स्थापना दिवस प्रतिपदा को ही मनाया जाने लगा था। उसके बाद के लोगों को इसी दिन की भ्रान्ति हो गयी और शिलालेख में वही तिथि अंकित करा दी। प्राप्त प्रमाणों के अनुसार चैत्र शुक्ला पंचमी शुद्ध तिथि है। सार्वदेशिक सभा प्रतिनिधि सभाओं तथा आर्यों को यही तिथि स्वीकार करनी चाहिए अन्यथा, ऋषि दयानन्द के अनुयायी होकर उन्हीं का अमान्य सिद्ध करना है।

सार संक्षेप–

इस प्रकार अनेक पुष्ट प्रमाणों से यह सुतरां सिद्ध है कि आर्यसमाज की स्थापना चैत्रशुक्ला पंचमी को हुई थी, न कि चैत्र शुक्ला प्रतिपदा को। अत: सत्य के ग्राहक सभी आर्यों और आर्यसमाजों को स्थापना दिवस की प्रचलित मान्यता में सुधार कर लेना चाहिये, अन्यथा लेख के आरम्भ में प्रदर्शित सृष्टिसंवत् से लेकर शंकराचार्य आदि के कालक्रम कीभांति आर्यसमाज स्थापना की तिथि विषयक मतभेद चलता ही रहेगा। आर्यसमाज का चतुर्थ नियम प्रत्येक आर्य को स्मरण रखकर इस उपर्युक्त सत्य को भी मान लेना चाहिये।

–विरजानन्द दैवकरणि
मो० - 9416055702

शहीद पं० लेखराम आर्यपथिक का अन्तिम सन्देश।

शहीदेअकबर का खूनेनाहक यह कर रहा है सुना 2 कर।
कि वेद-मत के चमन को सींचो लहू को अपने बहा 2 कर।।
मिशन से अय उन्स रखनेवालों दिलोंसे अब बुजदिली निकालो।
सरे तअस्सुव को काट डालो कलम के खञ्जर चला 2 कर।।
कसम है वेदों की तुम को मित्रो जरा झिझकना न धर्मवीरो।
मुखालिफों को शिकस्त देदो सिपाहे बर्हा चढ़ा 2 कर।।
जरा शुजाअत से काम लो अब बर आयगा बस इसीसे मतबल।
गिरेंगे सिजदे में ओम् के सब सरों को अपने झुका 2 कर।।
किसी का मुतलक न खौफ खाओ बहादुराना झलक दिखाओ।
कदम को आगे बढ़ाते जाओ तुम अपनी हिम्मत बढ़ा 2 कर।।
सदा लगाओ हर एक घर में अलख जगाओ नगर 2 में।
करो इशाअत जमाने भर में मुसीबतें लाख उठा 2 कर।
छुर पै अपना कलेजा धर दो डरो किसी से न शेर मर्दो।
मिशन की भट्टी में राख भर दो बदन को अपने जला कर।।
अगर है वेदों से कुछ मुहब्बत करो जहाँ तक भी हो हिफाजत।
पियो खुशी से मये शहादत तुम अपनी गर्दन कटा 2 कर।।
उदू के हमलों से दिल न तोड़ो न ध्यान धमकी पै उसकी दो तुम।
करें हिरासाँ हजार तुम को वह तेगे बुर्रां दिखा 2 कर।।
कहाँ को जाते हो देखो भालो न जिन्दगी को खतरे में डालो।
भँवर से बेड़ेको अब निकालो सब अपनी ताकत लगा 2 कर।
बड़ों की इज्जत को अब हैं खोते वह नाम ऋषियों का है डुबोते।
हजारों हिन्दू पतित जो होते जनेऊ चोटी कटा 2 कर।।
अलग हुये जो तुम्हारे मत से कभी थे भाई तुम्हारे सच्चे।।
बिठाओ पहलू में प्यार करके गले से अपने लगा 2 कर।।
मकाने नफरतको जड़ से ढाओ ग्लानि मन से 'फिदा' हटाओ।
रसोई हाथों से उनके खाओ घरों में अपने बिठा 2 कर।।

जातीय गायन संग्रह सन् 1926 से साभार

गुरुवर स्वामी ओमानन्द सरस्वती–एक महान् व्यक्तित्व

पारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः,
प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुन पुनरपि प्रतिहन्यमानाः,
प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति।।

कमजोर व्यक्ति विघ्नों के भय से कार्य का आरम्भ नहीं करते, मध्यम कोटि के व्यक्ति कार्य को आरम्भ करके विघ्न आने पर कार्य को मध्य में ही छोड़कर बैठ जाते हैं, परन्तु उत्तम कोटि के (वीर पुरुष) कार्य को आरम्भ करने के उपरान्त बीच में अनेक बाधाओं के उपस्थित होने के उपरान्त भी कार्य को पूर्ण किये बिना मध्य में नहीं छोड़ते।

उपर्युक्त उक्ति स्वर्गीय पूज्यपाद त्यागमूर्ति बाल ब्रह्मचारी तपोधन (आचार्य भगवान्देव=संन्यस्त बने) स्वामी ओमानन्द सरस्वती के जीवन को पूर्णरूपेण भूषित करती हुई दिखाई देती है। यह निर्भीक वीर संन्यासी अपने जीवन में अनेक आन्दोलनों का प्रणेता रहा, सत्याग्रहों और आन्दोलनों के मध्य कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा तथा सभी आन्दोलनों में विजय एवं यश की पताका फहराता रहा। सन् 1931 में देशभक्त परवाने शहीद भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव को फांसी दी गई। इन देशभक्तों के बलिदान की गूंज राष्ट्र के कोने-कोने तक फैल गई, उन वीरों के बलिदान से राष्ट्र की युवापीढ़ी में उफान आया। अनेक होनहार युवक राष्ट्र की स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर आहुति के लिए अग्रसर दिखाई पड़े। इन युवकों में नरेला दिल्ली के एक समृद्ध भूस्वामी श्री कनकसिंह नम्बरदार का इकलौता पुत्र भगवान्देव भी अग्रसर हुआ। इस युवक ने धनधान्य से भरपूर घर-परिवार को उसी प्रकार तिलांजलि दे दी जिस प्रकार राजकुमार सिद्धार्थ ने राजधानी कपिलवस्तु का त्याग किया था तथा जिस प्रकार शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी लालजी मूलशंकर ने अपने समृद्ध पिता लाल जी कर्षन जी के घर-परिवार सहित जन्मस्थान टंकारा का भी त्याग किया था। देहली सेंट स्टीफन्स कॉलेज के इस विद्यार्थी के हृदय में राष्ट्रभक्त, देश की आजादी के दीवाने वीरों के बलिदान ने वह ज्योति जलाई जो किसी समय वीर क्रान्तिकारियों के सिरमौर रामप्रसाद बिस्मिल ने कहा था–

मरते बिस्मिल, रोशन, लहरी अशफाक अत्याचार से।
होंगे पैदा सैकड़ों, उनके रुधिर की धार से।।

अंग्रेजों के इस जालिम अत्याचार ने युवक भगवान्देव के हृदय में अंग्रेजी शिक्षा, अंग्रेजी संस्कृति-सभ्यता, अंग्रेजी रहन-सहन तथा खान-पान के प्रति घृणा उत्पन्न कर दी। किं बहुना! ब्रह्मचारी भगवान्देव जी का जीवन महाराज योगिप्रवर भर्तृहरि के निम्न श्लोक के अनुरूप व्यतीत होने लगा–

धैर्यं यस्य पिता क्षमा च जननी शान्तिश्चिरं गेहिनी,
सत्यं मित्रमिदं दया च भगिनी भ्राता मनः संयमः।
शय्या भूमितलं दिशोऽपि वसनं ज्ञानामृतं भोजनम्,
ह्येते यस्य कुटुम्बिनो वद सखे कस्माद् भयं योगिनः।।

घर-परिवार, माँ-बाप एवं बहन को छोड़कर अब यह ब्रह्मचारी निर्भय हो गया, क्योंकि भर्तृहरि के समान जिसका पिता धैर्यवान् है, माता

क्षमाशीलता है, मन की शान्ति ही जिसकी गृहिणी है, सच्चाई से जिसकी मित्रता है, दयालुता जिसकी बहन है, संयमी मन ही जिसका भाई है, जिसकी शय्या ही भूमि हैं, कौपीन व कटिवस्त्र जिसका वसन है तथा ज्ञानप्राप्ति ही जिसका भोजन हो उस वैरागीको किसका भय हो सकता है? अब यह ब्रह्मचारी देशहित में अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध हिमालय पर्वत के समान अडिग खड़ा हो गया तथा गान्धी जी द्वारा चलाये गये असहयोग आन्दोलन को सफल बनाने के लिए यह वीर स्वतन्त्रता सेनानी गांव-गांव तथा नगर-नगर घूमकर कभी पैदल तो कभी मोटर साइकिल पर दिन-रात जनजागरण में रत रहते हुए असहयोग आन्दोलन को सफल बनाकर अंग्रेजी राज्य से देश को छुटकारा दिलवाने का सतत प्रयास करता रहा।

उसके उपरान्त भारत छोड़ो आन्दोलन में अंग्रेजों को देश से बाहर कर देश को गुलामी से मुक्ति दिला; भारत माता की गुलामी की बेड़ियों को छिन्न-भिन्न कर महर्षि दयानन्द के उस स्वप्न को पूरा करने की लड़ाई लड़ता रहा जिसमें ऋषि जी ने कहा है कि राष्ट्र में विदेशी राजा कभी न हो, विदेशी राज्य कितना भी माता-पिता के समान प्रजा से प्यार करने वाला क्यों न हो- वह पक्षपात से रहित भी क्यों न हो- तो भी यह स्वदेशी राज्य की तुलना में श्रेष्ठ नहीं हो सकता।

हरियाणा देहली की सीमा पर हरियाणा के कुण्डली ग्राम के निकट जून, सन् 1968 में कत्लखाना (बूचड़खानों) खोलन के लिए आरम्भिक कार्यवाही चालू हुई, भला स्वामी ओमानन्द जी जैसे निर्भीक, धर्मात्मा आर्यनेता के होते हुए यह कैसे सम्भव हो सकता था? इस वीर आर्यनेता ने हरियाणा एवं देहली के गांव-गांव में अपनी जीप के माध्यम से घूम-घूमकर आर्यजनों की सत्याग्रही सेना तैयार कर के खड़ी कर दी।

भयंकर गर्मी में हरियाणा के प्रत्येक गांव से सैंकड़ों-सैंकड़ों लोग जन-टोली बनाकर आर्यनेता के नेतृत्व में कुण्डली गांव में सत्याग्रह के लिये एकत्र होगये। निश्चित तिथि 28 जून को हजारों आर्यजन अपने नेता को घेरे हुए खड़े थे, और आदेश होते ही आर्यजन बूचड़खाने को खाक में मिलाने के लिए कटिबद्ध थे। दूसरी तरफ हरियाणा पुलिस के सैनिक आदेश प्राप्त होते ही आर्यजनों को गालियों से भूनने के लिए तत्पर थे। बड़ा ही रोमाञ्चक दृश्य था।

उस दृश्य को देखकर मुझे इतिहास की उन घटनाओं का स्मरण हो आया जब रोलेट एक्ट के विरोध में स्वतन्त्रता से पूर्व दिल्ली के चांदनी चौक में हजारों हिन्दू-मुस्लिम भाई अपने प्रिय नेता निर्भीक संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी की सिंहगर्जना के साथ गगनभेदी नारों से आकाश को गुंजाते हुए आगे ही आगे बढ़ते जा रहे थे और तब अंग्रेजी पलटन ने आकर उस निर्भीक संन्यासी की छाती पर अपनी संगीनें अड़ा दी थी, तब उस निर्भीक संन्यासी ने ललकार कर कहा था, यदि इस अंग्रेजी साम्राज्य में कोई गोली बनी है तो इस साधु की छाती पर चलाकर देखो। उस वीर संन्यासी की सत्याग्रही सेना के लिये रास्ता खोल दिया। इसी प्रकार उस वीर संन्यासी श्रद्धानन्द के श्रद्धालु शिष्य स्वामी ओमानन्द की उस वीर

वाहिनी सत्याग्रही सेना के समक्ष तत्कालीन मुख्यमंत्री चौधरी बंसीलाल की सरकार कांप उठी और तत्काल ही मुख्यमंत्री जी का सन्देश स्वामी जी को प्राप्त हुआ जिसमें करबद्ध प्रार्थना की गई थी कि आचार्य जी आप अपना आन्दोलन समाप्त करें, हम आपसे विश्वास पूर्वक प्रार्थना करते हैं कि यहाँ पर किसी अवस्था में पशु कत्लखाना (बूचड़खाना) नहीं खोला जाएगा।

यहाँ पर इस विषय में, मैं चौ० बंसीलाल की प्रंशसा किये बिना नहीं रह सकता वह जैसे स्वभाव के कठोर थे वैसे ही वाणी के धनी भी थे। वर्तमान की सरकारें प्रतिदिन वायदे करती हैं, तथा तुरन्त गिरगिट के समान रंग कदल जाती हैं। चौ० बंसीलाल के साथ अध्यापक संघ-70 का 1984 में लिखित में समझौता हुआ उस समय अध्यापकों के नेता चौ० सोहनलाल, किताबसिंह मलिक प्रधान, मैं उपप्रधान तथा नवल जी मंत्री थे। जैसा तेरह मांगों के बारे में समझौता हुआ वह पूर्णरूप से लागू किया गया। जैसी कठोरता उन्होंने 1973 में अध्यापकों के साथ की थी उन सबकी पूर्ति उन्होंने 1984 में पूरी कर दी।

हिन्दरक्षा आन्दोलन– सन् 1957 में संयुक्त पंजाब की कैरों सरकार ने सच्चर फार्मूले के आधार पर पंजाबी बोली को भाषा का रूप देकर सभी सरकारी विद्यालयों में पंजाबी भाषा (बोली) का अध्ययन अनिवार्य कर दिया। हरियाणा संस्कृति, सभ्यता के रक्षक वैदिक धर्म के दीवाने इस जोर-जबर्दस्ती को कैसे सहन कर सकते थे। इसी के परिणाम स्वरूप आचार्य जी ने हिन्दी भाषा की रक्षा हेतु पंजाब सरकार के विरुद्ध सत्याग्रह रूपी युद्ध का श्रीगणेश कर दिया। सम्पूर्ण राष्ट्रजन के हिन्दी प्रेमीजन इस महाभारत युद्ध में अपने-अपने शौर्य को प्रकट करने के लिये इकट्ठे हो गये और इस आन्दोलन ने राष्ट्रीय आन्दोलन का रूप धारण कर लिया। इस आन्दोलन का नेतृत्व आर्यसमाज ने संभाला। आचार्य भगवान्देव को हरियाणा, देहली व राजस्थान में सत्याग्रहियों की सेना तैयार करने के लिए विशेष रूप से आदेश दिया गया। आर्यसमाज के इस वीर योद्धा ने अपनी अपूर्व संगठन शक्ति का परिचय देते हुए हरियाणा, देहली व राजस्थान के 50 हजार सत्याग्रहियों से पंजाब राज्य की जेलों को पूरी तरह से भर दिया।

उस समय मैं गुरुकुल झज्जर का विद्यार्थी था। मैंने उस समय सभी बड़े सहपाठियों की एक विशेष बैठकर बुलाकर प्रस्ताव रखा कि हमारा भी कर्त्तव्य बनता है कि हम भी मातृभाषा हिन्दी की रक्षा के लिये आन्दोलन कर जेल यात्रा करें और इसी प्रकार का एक प्रस्ताव पास करके गुरुकुल के अधिष्ठाता आचार्य वेदव्रत शास्त्री को सौंपा। आचार्य वेदव्रत शास्त्री जी ने उसकी स्वीकृति गुरुवर आचार्य भगवान्देव से प्राप्त करनी चाही परन्तु गुरुवर्य ने इसकी स्वीकृति प्रदान नहीं की, जिसके कारण आर्ष प्रणाली से पढने वाले तत्कालीन सभी ब्रह्मचारियों ने अत्यन्त निराश होकर दु:ख अनुभव किया। परन्तु गुरुकुल में आयुर्वेद पढने वाले छात्रों का एक जत्था सत्याग्रह में अवश्य सम्मिलित हुआ था।

आचार्य जी की सुदृढ़ कार्य प्रणाली के कारण उनकी गिरफ्तारी के वारण्ट कर दिए गए।

हिन्दी रक्षा समिति ने उनको गिरफ्तार न होकर तथा भूमिगत रहते हुए आन्दोलन को सफल बनाने के लिए कार्य सौंपा। लगातार सत्याग्रहियों की बढ़ती संख्या से पंजाब सरकार बौखला उठी, उन्होंने बौखलाहट में अपने गुण्डे सैनिकों द्वारा फिरोजपुर जेल में बन्द निहत्थे सत्याग्रहियों पर लाठियों, गोलियों से हमला करवा दिया जिसमें अनेक वीर सत्याग्रही घायल हुए तथा एक आर्ययुवक सुमेरसिंह ग्राम नयाबांस रोहतक वाला शहीद हुआ। अन्त में पंजाब सरकार के मुख्यमंत्री प्रतापसिंह कैरों को झुकना पड़ा। आर्यसमाज की विजय हुई। सत्याग्रही गगनभेदी विजयी जयकारों के साथ अपने-अपने गन्तव्य की ओर चल पड़े। आते समय अम्बाला के पास रेल दुर्घटना में दो आर्य वीर सत्याग्रही ग्राम गुलकणी जिला जीन्द हरयाणा के स्वर्णसिंह व अमरसिंह शहीद हो गए। उनकी स्मृति में गुरुवर ने एक शहीद स्मारक का निर्माण करवाया तथा मान्यवर स्वामी कर्मपाल जी जिन्होंने पंचायती फैसलों द्वारा अनेक उजड़े हुए घरों को पुनः बसाया है, उन्हें उस आश्रम का अधिष्ठाता नियुक्त किया जो कि आज भी उसे सुचारु रूप से चला रहे हैं।

उपर्युक्त हिन्दीरक्षा आन्दोलन के मध्य गुरुजी इस विषय को पूरी तरह समझ चुके थे कि संयुक्त पंजाब में हरियाणा के हितों की रक्षा नहीं की जा सकती। अतः हरियाणा प्रदेश की संस्कृति, सभ्यता को किसी प्रकार बचाना है तो हरियाणा राज्य का पृथक् अस्तित्व आवश्यक है। अतः इसी आधार पर उन्होंने 1962 के चुनाव में प्रो० शेरसिंह तथा पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती जी से मिलकर हरयाणा लोक समिति नामक राजनैतिक पार्टी के नाम से चुनाव लड़वाए तथा चौ० देवीलाल, प्रो० शेरसिंह आदि राजनेताओं से मिलकर पृथक् हरियाणा राज्य के लिए संघर्ष किया। आज प्रत्येक राजनेता अपने आपको हरियाणा निर्माता कहलवाने का गौरव प्राप्त करना चाहता है। वास्तव में हरियाणा निर्माण का श्रेय स्वामी ओमानन्द, चौ० देवीलाल, प्रो० शेरसिंह आदि धार्मिक व राजनैतिक नेताओं को जाता है। एक नवम्बर 1966 में हरियाणा राज्य का पृथक् अस्तित्व हुआ। इसके पश्चात् संयुक्त पंजाब की राजधानी चंडीगढ़ हरियाणा प्रान्त को मिले अथवा पंजाब की दी जाये तथा कौन-कौन से हिन्दीभाषी क्षेत्र हरियाणा को तथा कौन-कौन से क्षेत्र पंजाब को देय बनते हैं। इस विषय को लेकर भी दोनों प्रान्तों में लम्बा संघर्ष चला। पंजाब के फेरुमान ने चंडीगढ़ के लिए आमरण अनशन आरम्भ किया। उस समय गुरुवर स्वामी ओ मानन्द जी आमरण अनशन को आत्महत्या के समान पाप समझते थे। उसके उपरान्त भी विवश होकर फेरुमान के मुकाबले में संयुक्त पंजाब के अध्यापक संघ के प्रधान, पूर्व एम.एल.सी. तथा लम्बे समय तक जाट शिक्षण संस्थाओं के प्रधान रहे अपने अनन्य भक्त, परम श्रद्धालु चौ० उदयसिंह मान को अनशन पर बैठाया। फेरुमान लम्बे आमरण अनशन के कारण मृत्यु को प्राप्त हुए। स्वामी जी ने अत्यन्त बुद्धिमत्ता पूर्वक लम्बे अनशन के उपरान्त सम्मानपूर्वक मान साहब का अनशन तुड़वाया और चंडीगढ़ के बदले अबोहर फाजिल्का की अत्यन्त उपजाऊ भूमि जिसे सोना उगलने वाली जमीन कहा जाता है

उसे प्राप्त करने का समझौता किया।

1967, 68 में हरियाणा के अध्यापकों के वेतनमान के लिए चट्टोपाध्याय वेतन आयोग का गठन हुआ। इससे पूर्व संस्कृत अध्यापक (शास्त्री O.T) को जे.बी.टी. अध्यापक से तीन वेतन वृद्धियां अधिक प्राप्त होती थी, लेकिन इस वेतन आयोग ने इस वेतन वृत्तियों को समाप्त कर दिया। इस अत्याचार से हमारी आत्मा अत्यन्त मर्माहत हुई। इस बारे में, मैंने गुरुवर स्वामी ओमानन्द जी से भी प्रार्थना की, गुरुजी ने हमें उत्साहित करते हुए पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। हरियाणा में उस समय गर्वनरी राज्य था। स्वामी जी को राज्यपाल बी.एन. चक्रवर्ती ने राजपण्डित की पदवी से सुशोभित करने के लिए चंडीगढ़ टैगोर भवन में आमंत्रित किया। देहली सरकार में स्वास्थ्यमंत्री व विधानसभा अध्यक्ष रहे डॉ० योगानन्द शास्त्री उस समय गुरुकुल झज्जर के विद्यार्थी थे, जिन्होंने हमारे इस कार्य में पूर्ण मनोयोग से मदद की थी, वे भी स्वामी जी के प्रिय शिष्य होने के कारण चंडीगढ़ उनके साथ थे। मैं भी समय से पूर्व चंडीगढ़ टैगोर भवन पहुँच गया था। राज्यपाल द्वारा सम्मान के उपरान्त स्वामी जी आभार प्रकट करने के लिए खड़े हुए। उन्होंने कहा, मैं एक साधु हूँ, साधु तो सदा मान-अपमान से दूर रहता है और यदि मुझे सच्चे अर्थों में सम्मानित ही करना है तो मेरे हृदय में एक टीस है, दर्द है, उसको गवर्नर साहब आप आज दूर कर सकते हैं और वह है, आज आज़ादी के 20 वर्षों के उपरान्त भी संस्कृत को अंग्रेजी अध्यापकों से न्यून वेतन प्राप्त होता है। आप अंग्रेजी अध्यापकों से संस्कृत अध्यापकों का ग्रेड अधिक नहीं कर सकते हों तो कम से कम बराबर ही कर दीजिए, इसी में मेरा सम्मान है। इससे अधिक संस्कृत भाषा के प्रति प्यार और अपने विद्यार्थियों, शिष्यों के प्रति हितभावना एक गुरु की क्या हो सकती है? संस्कृत अध्यापक गुरुजी की इस कृपा को युगों-युगों तक याद रखेंगे। इस समय मैं भारत सरकार के तत्कालीन राज्य शिक्षामंत्री आर्यनेता प्रो० शेरसिंह जी एवं भारत सरकार के गृहराज्यमंत्री विद्याचरण शुक्ल को कैसे भूल सकता हूँ, जिन्होंने हरियाणा के तत्कालीन राज्यपाल को पत्रों द्वारा संस्कृत भाषा के प्रति आदर व स्नेह के कारण अध्यापकों की वकालत की थी।

मेरे जैसे सामान्य व्यक्ति की कलम उस ज्योतिस्वरूप गुरुवर स्वामी ओमानन्द सरस्वती के भव्य आन्दोलनात्मक कार्यों का इस छोटे से लेख में गागर में सागर नहीं भर सकती, उनके गुणात्मक कार्यों,गोरक्षा आन्दोलन, शराबबन्दी आन्दोलन, आजादी के लिए संघर्ष, आर्ष साहित्य का प्रकाशन, हैदराबाद आन्दोलन, इतिहास लेखन, पुरातत्त्व संग्रहालय का निर्माण, आर्य शिक्षा का प्रसार, पाखण्ड उन्मूलन, अनेक हितकारी कल्प हैं, जिनमें उन्होंने अपने जीवन को अर्पित किया।

इसके उपरान्त उन्हीं की ज्योति के रूप में आज रोजड़ (गुजरात) में स्वागी सत्यपति जी अनेक विद्वानों के निर्माण में लगे हुए हैं। उसी ज्योति के रूप में डॉ० धर्मवीर जी अजमेर ने वैदिक धर्म के प्रचार में अपने जीवन की आहुति दे दी जिनका स्थान आज डॉ० सुरेन्द्रकुमार पूर्व कुलपति गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार सम्भाले हुए

हैं। देहली में डॉ० योगानन्द शास्त्री, डॉ० महावीर मीमांसक, श्री राजवीर जी शास्त्री व स्वामी प्रणवानन्द जी उस ज्योति के प्रकाश को फैला रहे हैं। रोहतक में स्वर्गीय आचार्य वेदव्रत शास्त्री व आचार्य सुदर्शनदेव ने उनके कार्यों को प्रगतिशील किया। गुरुकुल झज्जर में उनके प्रिय शिष्य आचार्य विजयपाल जी व विरजानन्द दैवकरणि उन्हीं के कार्यों की पूर्ति में अपने जीवन को अर्पित कर रहे हैं। राजस्थान झुंझनूं में उनके योग्य शिष्य आचार्य धर्मव्रत शास्त्री धर्म-प्रसार का कार्य कर रहे हैं। जीन्द गुरुकुल कालवा में तप-त्याग की प्रतिमूर्ति आचार्य बलदेव जी अनेक विद्वानों का निर्माण कर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान के रूप में उन्हीं के स्थानापत्र होकर तथा मैंने सभामंत्री पद पर रहते हुए कार्यकारिणी के सहयोग से बड़े-बड़े आन्दोलनों का श्रीगणेश किया। रामपालदास जैसे पाखण्डी के विरुद्ध आन्दोलन कर आजीवन कारावास के लिए जेल भेजा। भारत सरकार द्वारा कॉमनवेल्थ गेमों में विदेशी खिलाड़ियों को गोमांस परोसने का विरोध कर, भारत सरकार के इस निर्णय को समाप्त करवाया गया। दयानन्दमठ की समस्त आठ एकड़ भूमि सभा के नाम करवाई गई। ये समस्त आन्दोलनात्मक कार्य गुरुजी की ही शिक्षा व प्रेरणा से ही सम्भव हुए।

गुरुवर स्वामी ओमानन्द जी के स्वर्गवास से लगभग तीन मास पूर्व मैं गुरुकुल में गया था। मैंने उनके चरणस्पर्श कर नमस्ते की। दृष्टि कमजोर होने के कारण, उन्होंने पूछा कौन-सा है भाई? मैंने कहा गुरुजी मैं सत्यवीर शास्त्री गढ़ी हूँ। उन्होंने अत्यन्त स्नेहपूर्वक कन्धे पर हाथ रखकर कहा, बेटा तुम सदा अत्याचार के विरुद्ध लड़ते रहे हो, इस बात की मुझे खुशी है, फिर पूछा बेटा कितनी बार आन्दोलनों में जेल गये हो? मैंने कहा गुरुजी पांच बार, उन्होंने कहा, बहुत अच्छा, गुरुजी के अन्तिम वाक्य मेरे लिये किसी याज्ञिक प्रसाद से कम पवित्र नहीं हैं। ये वाक्य मुझे अन्याय के विरुद्ध लड़ने के लिए सदा उत्साहित करते रहेंगे।

लेखक– सत्यवीर शास्त्री, म० नं० 484/30, देव कालोनी, निकट जाट कॉलेज, दिल्ली रोड, रोहतक (हरियाणा)
मो० - 9416997576

गुरुकुल झज्जर में नया प्रवेश प्रारम्भ

सभी सज्जनों को सूचित किया जाता है कि गुरुकुल झज्जर में नवीन छात्रों के प्रवेश की प्रक्रिया प्रारम्भ हो चुकी है। प्रवेश के इच्छुक व्यक्ति सम्पर्क कर सकते हैं। प्रवेश लेने वाला छात्र कम से कम पांचवीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिये।

प्रवेश हेतु परीक्षा तिथियां

7, 21 अप्रैल 2019 रविवार
5, 19 मई 2019 रविवार
2, 16 जून 2019 रविवार
अधिक जानकारी हेतु दूरभाष से सम्पर्क करें।

सम्पर्क सूत्र

आचार्य	कार्यालय
9416055044	9416661019

गुरुकुल झज्जर का 103 वां वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न

3-4 मार्च 2019 को महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर का 103 वां वार्षिकोत्सव अत्यन्त समारोह के साथ मनाया गया। 28 फरवरी से सामवेद पारायण यज्ञ प्रारम्भ हुआ, इसकी पूर्णाहुति 4 मार्च को प्रातः 10 बजे सम्पन्न हुई, इस यज्ञ के ब्रह्मा डॉ० जगदेव जी (रोहतक) थे। यज्ञवेदी पर स्वामी देवव्रत जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी तथा डॉ० जगदेव जी के प्रवचन हुए। तदनन्तर बलिदान भवन में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा ईश्वर स्तुति प्रार्थना से मन्त्रोच्चारण से महोत्सव का प्रारम्भ हुआ। पं० रामनिवास जी तथा कल्याणी देवी जी के मधुर भजनों ने श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया। उत्सव में गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने भजन और भाषण के द्वारा जनता पर अपनी योग्यता की छाप छोड़ी। डॉ० जय भारती (पंचकूला) ने स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमों से जनता को परिचित कराया। हरियाणा के कृषि मन्त्री चौ० ओम्प्रकाश धनखड़ ने अपने वक्तव्य के पश्चात् 11 लाख रुपये अपने विभाग से देने की घोषणा की। तदनन्तर चौ० पूर्णसिंह जी देशवाल तथा आचार्य विजयपालजी ने धनखड़ जी को सम्मानित किया। सम्मान में शाल, स्मृतिचिह्न तथा गुरुकुल का साहित्य और विशिष्ट औषधियां दी गई।

इसी प्रकार हरियाणा के सहकारिता मन्त्री श्री मनीष ग्रोवर जी ने अपने सारगर्बित वक्तव्य के पश्चात् अपने विभाग से 11 लाख रुपये प्रदान करने की घोषणा की। इनको भी पूर्वमन्त्री की भांति सम्मानित किया गया। डॉ० राजपाल (रोहतक) ने भी वेदमन्त्रों की व्याख्या पूर्वक अपना उपदेश दिया। तत्पश्चात् स्वामी धर्मेश्वरानन्दजी तथा स्वामी विश्वानन्दजी के उपदेश हुए। इनके बाद स्वामी धर्मानन्दजी का अध्यक्षीय भाषण हुआ।

सायं 4 बजे गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने व्यायाम के अद्भुत कौशल का प्रदर्शन किया। स्वामी शुद्धबोध जी तथा ब्र० अरुण (सिलानी) के नेतृत्व में संचलन, सर्वांगसुन्दर व्यायाम, सूर्यनमस्कार, भूमि-नमस्कार, लाठी, भाला, तलवार, छुरी, योगासन, दण्ड, बैठक, रस्सा मल्लखम्भ, मल्लखम्भ, डम्बल, जिम्नास्टिक, गले से सरिये मोड़ना, छाती पर पत्थर तुड़वाना, बेल तोड़ना और प्राणायाम के बल पर जीप रोकना आदि सम्मिलित थे। रात्रि को भजनोपदेशकों द्वारा मनोरंजन करने के साथ-साथ ज्ञानवर्धक बातें बताई। गुरुकुल की प्रबन्धकारिणी सभा की वार्षिक बैठक चौ० पूर्णसिंह की अध्यक्षता में हुई। इसमें वर्षभर का आय-व्यय सुनाया गया।

4 मार्च को प्रातः यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् महोत्सव का प्रारम्भ हुआ। उत्सव में डॉ० जगदेव जी ने भी व्याख्यान दिया। तदनन्तर राजवीर जी ने राज्यपाल महोदय का परिचय दिया। हिमाचल के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी ने ऋषि दयानन्द जी के जीवन का लक्ष्य करके बोधरात्रि का महत्त्व बताया और गुरुकुल की सहायतार्थ दो लाख रुपये प्रदान करने का वचन दिया। राज्यपाल जी को सम्मानित करते हुए गुरुकुल के प्रधान चौ० पूर्णसिंह देशवाल तथा आचार्य विजयपाल जी ने महामहिम जी को शाल, स्मृतिचिह्न, साहित्य तथा औषधियां प्रदान की।

मंच का संचालन गुरुकुल के मन्त्री श्री राजवीर सिंह छिकारा ने अति योग्यतापूर्वक किया। इसके पश्चात् डॉ० सुधीर जी (जे.एन.यू.दिल्ली) ने कहा कि आर्यसमाज से जन्मना जाति के प्रभाव को समाप्त करना चाहिये। दिल्ली के जे.एन.यू. में प्रथमवार मैंने महर्षि दयानन्द जी के ग्रन्थ पाठविधि में रखवाये हैं।

इस कार्यक्रम में निम्नलिखित सज्जनों ने अपनी पवित्र कमाई में से विशेष दान दिया–

श्री उमेद जी आर्य खूडन ने एक लाख रुपये, श्री महाशय रामफल आर्य टीकरी कलां दिल्ली, एक लाख रुपये, चौ० पूर्णसिंह देशवाल प्रधान गुरुकुल झज्जर 21000 रुपये, स्वामी धर्मानन्दजी गुरुकुल आमसेना 11000 रुपये, श्री रामनारायण प्रधान रसूलपुर दिल्ली 11000 रुपये, श्री सिंहराम आर्य गोच्छी झज्जर 11000 रुपये।

पुरस्कारों के अनन्तर डॉ० रघुवीर जो तथा ब्र० अग्निदव जी ने अपना उद्‌बोधन भी दिया। उत्सव की समाप्ति करते हुए आचार्य विजयपाल जी ने सभी आगन्तुकों का विशिष्ट अतिथियों, दानदाताओं और श्रोताओं का हार्दिक धन्यवाद किया और निवेदन किया कि आप लोग इसी भांति प्रतिवर्ष आकर धर्मलाभ उठाते रहें तथा हमारा उत्साह वर्धन करते रहें। सभी आगन्तुकों के भोजन का प्रबन्ध श्री ओम्प्रकाश जी कैप्टन, श्री अशोक शास्त्री, कुलदीप जी तथा महावीर जी शास्त्री ने किया। तदनन्तर शान्ति पाठ के साथ कार्यवाही सम्पन्न हुई।

'सुधारक' के स्वामित्व आदि का विवरण
फार्म-4 (देखो नियम 8)

1.	प्रकाशन स्थान	–	गुरुकुल झज्जर (जिला झज्जर)
2.	प्रकाशन अवधि क्रम	–	प्रतिमास
3.	मुद्रक का नाम	–	डॉ० विक्रमसिंह शास्त्री
	राष्ट्रीयता	–	भारतीय
	पता	–	आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्द मठ, रोहतक
4.	प्रकाशक का नाम	–	आचार्य विजयपाल
	राष्ट्रीयता	–	भारतीय
	पता	–	महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर, (जिला झज्जर)
5.	प्रधान सम्पादक का नाम	–	आचार्य विजयपाल
	राष्ट्रीयता	–	भारतीय
6.	सम्पादक का नाम	–	विरजानन्द दैवकरणि
	राष्ट्रीयता	–	भारतीय
	पता	–	महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर, (जिला झज्जर)
7.	उन शेयर होल्डरों के नाम और पते जिनके पास कुल पूंजी के लिए एक प्रतिशत से अधिक शेयर हैं।	–	प्रकाशन आदि का सम्पूर्ण व्यय गुरुकुल झज्जर करता है अन्य कोई हिस्सेदार नहीं।

मैं आचार्य विजयपाल घोषित करता हूँ कि ऊपर दिया हुआ विवरण सत्य है।

–प्रकाशक के हस्ताक्षर
आचार्य विजयपाल

गुरुकुल झज्जर के 103 वें उत्सव की चित्रमय झांकी

चौ0 ओम्प्रकाश धनखड़ उद्‌बोधन देते हुए

चौ0 ओम्प्रकाश धनखड़ को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए डॉ0 जय भारती आदि

स्वामी देवव्रतजी यज्ञशाला पर उपदेश देते हुए

पं0 रामनिवासजी भजन गाते हुए

राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी का स्वागत करते हुए आचार्य विजयपाल योगार्थी

राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी का स्वागत करते हुए डॉ0 राजकुमार आचार्य

राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी का स्वागत करते हुए विरजानन्द दैवकरणि

राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी व्याख्यान देते हुए

गुरुकुल झज्जर के 103 वें उत्सव की चित्रमय झांकी

राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी को
स्मृति चिह्न देते हुए

राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी
गुरुकुल गोशाला के सदस्य

श्री नरेन्द्र कटारिया वकील का स्वागत करते हुए श्री उमेद आर्य खूडन

श्री संजय जून उपायुक्त झज्जर को सम्मानित करते हुए चौ0 पूर्णसिंह देशवाल

श्री सत्यवीर प्रेरेक की पुस्तक का विमोचन
करते हुए महामहिम राज्यपालजी आदि

श्री डॉ0 रघुवीर वेदालंकार को सम्मानित
करते हुए आचार्य विजयपाल योगार्थी

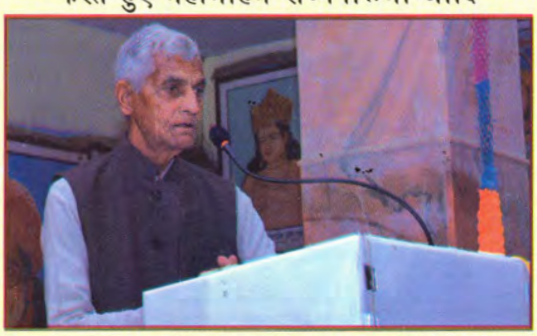

श्री डॉ0 रघुवीर वेदालंकार भाषण देते हुए

श्री ब्रह्मचारी अग्निदेव कालवा को सम्मानित
करते हुए गुरुकुल के अधिकारी

गुरुकुल झज्जर के 103 वें उत्सव की चित्रमय झांकी

ब्र0 अग्निदेव कालवा भाषण देते हुए

डॉ0 जगदेव जी भाषण देते हुए

मल्लखम्भ पर आसन करते हुए ब्र0 योगेश (नांगलोई)

आग के गोले में से कूदते हुए ब्रह्मचारी

नरेश शास्त्री गले से सरिया मोड़ते हुए

कमाण्डो का प्रदर्शन करते हुए ब्रह्मचारी

मुख से अग्नि निकालता हुआ ब्र0 नरेन्द्र देवास

उत्सव में पधारे अभ्यागतों का आभार व्यक्त करते हुए विजयपाल योगार्थी

॥ ओ३म् ॥

Your child's bright future with Indian culture ....

SHIVALIK

गुरुकुल

A Modern C.B.S.E. Pattern Residential School Only for Boys

स्वामी दयानंद सरस्वती
(आर्य समाज के संस्थापक)

प्रवेश प्रारम्भ
कक्षा चौथी से नौवीं तक

आर्यों की आशाओं का शिक्षा-केन्द्र अब अम्बाला में भी ।

आदरणीय आर्यजन! आपको जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि अम्बाला जिले के अलियासपुर गांव में आर्योचित संस्कारों के साथ अप्रैल 2018 से **शिवालिक गुरुकुल** का संचालन किया जा रहा है। जिसमें बालकों को वर्तमान CBSE पाठ्यक्रम के साथ वैदिक संस्कार भी दिए जा रहे हैं ।

शिवालिक गुरुकुल में स्थित मूलभूत सुविधाएँ एवं चल रहे अन्य क्रियाकलाप:-

आचार्य नन्दकिशोर
(निदेशक)

मूलभूत सुविधाएँ

❖ आधुनिक सुविधाओं से युक्त विशाल एवं हवादार कक्षा-कक्ष ❖ अंग्रेजी, हिन्दी व संस्कृत प्रशिक्षण के लिए भाषा प्रयोगशाला ❖ सभी विषयों की पुस्तकों से सुसज्जित पुस्तकालय ❖ CCTV कैमरे से युक्त छात्रावास एवं विद्यालय ❖ आधुनिक उपकरणों से युक्त शूटिंग रेंज ❖ नियमित अध्यापक-अभिभावक मीटिंग ❖ अत्याधुनिक Computer प्रयोगशाला ❖ SMS द्वारा सूचना प्रेषण ❖ सुसज्जित विज्ञान प्रयोगशाला ❖ समर्पित एवं अनुभवी स्टाफ ❖ सामाजिक विज्ञान कक्ष ❖ गणित कक्ष ❖ संगीत कक्ष ❖ गुरुकुल App के माध्यम से छात्रों की दैनिक शैक्षिक जानकारी ❖ शहर के [illegible]गुल से दूर प्राकृतिक सौन्दर्य से युक्त वातावरण ❖ सभी सुविधाओं से युक्त वातानुकूलित छात्रावास ❖ विभिन्न खेल प्रशिक्षण के लिए प्रशिक्षकों की व्यवस्था ❖ प्रतिदिन सन्ध्या-यज्ञ के लिए यज्ञशाला ❖ विस्तृत व हरे-भरे खेल के मैदान ।

HOSTE[illegible]

• Stern Su[illegible]on by Wardens & CCTV Surveillance (24x7) • Fully Air Conditioned Hostel • SMS Alert Service • Lush Green Playground • Eco Friendly Environment • Special Focus on Moral Values • Congenial and clean rooms • Special Focus on interaction in English • Modern Shooting Range • Homelike Facilities and Comfortable Environment • 24 Hours Attendant Facility • 24x7 power back-up facility • Germs free toilets • Well-stocked dispensary for first-aid • Pure Vegetarian & Authentic Mess with Spotless Utensils

Vill. Aliyaspur, P.O. Sarawan, Mullana, Ambala-133 206 (Haryana) • E-mail : shivalikgurukul.ambala@gmail.com
Admission Helpline : 9671228002, 9671228003, 8813061212, 82958 96525, 82958 61525 • **Website :** www.shivalikgurukul.com

अलसस्य कुतो विद्या अविद्यस्य कुतो धनम् । अधनस्य कुतो मित्रम् अमित्रस्य कुतः सुखम् ।

आर.एन.आई. द्वारा रजि. नं. 11757
पंजीकरण संख्या-**P/RTK/85-3/2017-19**

सुधारक लौटाने का पता :-
गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर (हरयाणा)-124103
E-mail : gurukuljhajjar@gmail.com

ग्राहक संख्या

श्री
स्थान
डा०
जिला

प्रकाशक आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक में मुद्रक-डॉ० विक्रम सिंह शास्त्री के प्रबन्ध से छपवाया।